131वां संस्करण

फरवरी 2026

मन की बात

MANAV: नवाचार हेतु भारत का AI विज़न

- **एम** मोरल एंड एथिकल सिस्टम
- **ए** अकाउंटेबल गवर्नेंस
- **एन** नेशनल सॉवरेन्टी
- **ए** एक्सेसिबल एंड इंक्लूसिव एआई
- **वी** वैलिड एंड लेजिटीमेट सिस्टम

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

प्रधानमंत्री का सन्देश

सूची क्रम

मुख्य आलेख

20 **इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026** : समावेशी विकास के लिए भारत की एआई यात्रा

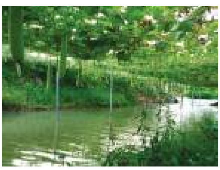

54 **नवाचार से वैश्विक निर्यात की ओर** : मज़बूत होता भारतीय कृषि क्षेत्र

62 **परीक्षा पे चर्चा** : 2026

लेख

30 **भारत की साहसिक एआई महत्त्वाकांक्षा** : 1.40 अरब लोगों के लिए मेधा का लोकतंत्रीकरण – देबजानी घोष

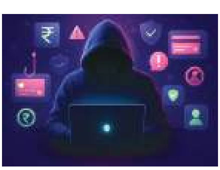

34 **सुविधा, विश्वास और सतर्कता** : डिजिटल युग में सुरक्षा का मंत्र –संजय मल्होत्रा

44 **भारत में अंगदान** : नीति, जनविश्वास और सामूहिक उत्तरदायित्व – डॉ. अनिल कुमार

संक्षेप में

26 भारत एआई इम्पैक्ट समिट 2026

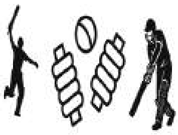

40 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में देश का मान बढ़ाते **भारतीय मूल के खिलाड़ी**

48 **जीवन का उपहार** : अंगदान की प्रेरक कहानियाँ

52 **राजाजी उत्सव** : सी. राजगोपालाचारी का स्मरण

58 **केरल कुम्भ** : दक्षिण में बहती आस्था की धारा

66 **उत्सव के रंग,** स्वदेशी की भावना के संग

69 प्रतिक्रियाएँ

मेरे प्यारे देशवासियो
नमस्कार

'मन की बात' में आपका स्वागत है, अभिनंदन है। 'मन की बात' देश और देशवासियों की उपलब्धियों को सामने लाने का एक मज़बूत प्लेटफॉर्म है। **देश ने ऐसी ही उपलब्धि अभी दिल्ली में हुई Global AI Impact Summit के दौरान देखी। कई देशों के नेता, उद्योग जगत के leaders, Innovators और Start-Up sector से जुड़े लोग AI Impact Summit के लिए भारत मंडपम में एकत्र हुए।** आने वाले समय में AI की शक्ति का उपयोग दुनिया किस प्रकार करेगी, इस दिशा में यह summit एक turning point साबित हुई है।

साथियो, Summit में मुझे World Leaders और Tech CEOs से मिलने का भी अवसर मिला। AI summit की exhibition में मैंने World Leaders को ढेर सारी चीजें दिखाई। **मैं दो बातों का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहता हूँ। Summit में इन दो products ने दुनिया भर के leaders को बहुत प्रभावित किया। पहला product अमूल के booth पर था।** इसमें बताया गया कि कैसे AI जानवरों का इलाज करने में हमारी मदद कर रही है और कैसे 24x7 AI assistance की मदद

से किसान अपनी डेयरी और जानवर का हिसाब रखते हैं।

साथियो, दूसरा product हमारी संस्कृति से सम्बंधित था। दुनिया भर के leaders ये देखकर हैरत में पड़ गए कि कैसे AI की मदद से हम हमारे प्राचीन ग्रंथों को, हमारे प्राचीन ज्ञान को, हमारी पांडुलिपियों को संरक्षित कर रहे हैं, आज की generation के अनुरूप ढाल रहे हैं।

साथियो, Exhibition के दौरान display के लिए सुश्रुत संहिता का चयन किया गया। पहले step में दिखाया गया कि कैसे technology की मदद से हम पांडुलिपियों की image quality सुधार कर उन्हें पढ़ने लायक बना रहे हैं। Second step में इस image को मशीन के पढ़ने लायक text में बदला गया। अगले step में machine-readable text को एक AI अवतार ने पढ़ा। और फिर, अगले step में हमने ये भी दिखाया कि कैसे technology से ये अनमोल भारतीय ज्ञान Indian languages और विदेशी भाषाओं में translate किया जा सकता है। भारत के प्राचीन ज्ञान को आधुनिक अवतार के माध्यम से जानने में World Leaders ने बहुत दिलचस्पी दिखाई।

साथियो, इस summit में दुनिया को AI के क्षेत्र में भारत की अद्भुत क्षमताएँ देखने को मिली हैं। इस दौरान भारत ने तीन Made In India AI Model भी launch किए। **यह अपने आप में अब तक की सबसे बड़ी AI summit रही है। इस summit को लेकर युवाओं का जोश और उत्साह देखते ही बन रहा था। मैं सभी देशवासियों को इस summit की सफलता की बधाई देता हूँ।**

साथियो, मैं अक्सर कहता हूँ 'जो खेले-वो खिले'। खेल हमें जोड़ता भी है। आजकल आप T-20 world cup

के मैच देख रहे होंगे। और **मुझे पक्का विश्वास है कि मैच देखते हुए कई बार आँखें किसी खास खिलाड़ी पर टिक जाती होंगी। Jersey किसी और देश की होती है लेकिन नाम सुनकर लगता है कि अरे, ये तो अपने देश का है।** तब दिल के किसी कोने में एक हल्की-सी खुशी आती है। क्योंकि वो खिलाड़ी भारतीय मूल का होता है और वो उस देश के लिए खेल रहा होता है जहाँ उसका परिवार बस गया है। वे अपने-अपने देशों की jersey पहन कर मैदान में उतरते हैं, पूरे मन से उस देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। Canada की टीम में सबसे ज़्यादा भारतीय मूल के खिलाड़ी हैं। टीम के कप्तान दिलप्रीत बाजवा का जन्म पंजाब के गुरदासपुर में हुआ था। नवनीत धालीवाल चंडीगढ़ के हैं। इस list में हर्ष ठाकर, श्रेयस मोवा जैसे कई नाम हैं, जो Canada के साथ-साथ भारत का भी गौरव बढ़ा रहे हैं। America की टीम में कई चेहरे

भारत के घरेलू क्रिकेट से निकले हुए हैं। अमेरिकी टीम के कप्तान मोनांक पटेल गुजरात की under-16 और under-18 टीम के लिए भी खेल चुके हैं। मुंबई के सौरभ, हरमीत सिंह, दिल्ली के मिलिंद कुमार, ये सब अमेरिकी टीम की शान हैं। Oman की टीम में आज कई चेहरे हैं जो पहले भारत के अलग-अलग राज्यों में खेल चुके हैं। जतिंदर सिंह, विनायक शुक्ला, करन, जय, आशीष जैसे खिलाड़ी Oman क्रिकेट की मज़बूत कड़ी हैं। New Zealand, UAE और Italy की टीमों में भी भारतीय मूल के खिलाड़ी अपनी जगह बना रहे हैं। **ऐसे कितने ही भारतीय मूल के खिलाड़ी हैं जो अपने देश का गौरव बढ़ा रहे हैं। वहाँ के युवाओं के लिए प्रेरणा बन रहे हैं। भारतीयता की यही तो विशेषता है। भारतीय जहाँ भी जाते हैं अपनी मातृभूमि की जड़ों से जुड़े रहते हैं। और अपनी कर्मभूमि यानी जिस देश में रहते हैं उसके विकास में भी सहयोग करते हैं।**

मेरे प्यारे देशवासियो, किसी भी माता-पिता के लिए अपने बच्चे को खोने से बड़ा दुख कुछ और हो ही नहीं सकता। छोटे से बच्चे को खोने का दुख तो और भी गहरा होता है। कुछ ही दिन पहले हमने केरल की एक नन्ही मासूम आलिन शेरिन अब्राहम को खो दिया है। महज 10 महीनों में वो इस दुनिया से चली गई। कल्पना कीजिए-उसके सामने पूरी ज़िंदगी थी, जो अचानक खत्म हो गई। कितने ही सपने और खुशियाँ अधूरी रह गईं। उसके parents जिस पीड़ा से गुज़र रहे होंगे, उसे शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता है। लेकिन इतने गहरे दर्द के बीच भी आलिन के पिता अरुण अब्राहम और माँ शेरिन ने एक ऐसा फैसला लिया, जिससे हर देशवासी का हृदय उनके प्रति सम्मान से भर गया है। उन्होंने आलिन के अंगदान का

फैसला किया। इस एक फैसले से पता चलता है कि उनकी सोच कितनी बड़ी है, और व्यक्तित्व कितना विशाल। एक तरफ वे अपनी बच्ची को खोने के शोक में डूबे थे, तो वहीं दूसरों की मदद का भाव भी उनमें भरा था। वे चाहते थे कि किसी भी परिवार को ऐसा दिन देखना ना पड़े। आलिन शेरिन अब्राहम आज हमारे बीच नहीं है, लेकिन उसका नाम देश के कम उम्र की organ donors में जुड़ गया है। **साथियो, इन दिनों भारत में organ donation को लेकर जागरूकता लगातार बढ़ रही है। इससे उन लोगों की मदद हो रही है, जिन्हें इसकी ज़रूरत है। इसके साथ ही देश में medical research को भी बल मिल रहा है। इस दिशा में कई संस्थाएँ और लोग असाधारण कार्य कर रहे हैं।**

साथियो, केरल की आलिन की तरह ही ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने organ donation के ज़रिए किसी को दूसरा जीवन दिया है। जैसे दिल्ली की लक्ष्मी देवी जी हैं। उन्होंने बीते वर्ष केदारनाथ की यात्रा की। इसके लिए उन्हें 14 किलोमीटर की ट्रैकिंग करनी पड़ी। आपको ये जान कर हैरानी होगी कि उन्होंने यह यात्रा heart transplant के बाद की। उनका heart केवल 15 प्रतिशत ही काम कर रहा था। ऐसे में उन्हें एक donor का heart मिला, जिसकी मृत्यु हो गई थी। इसके बाद तो उनका जीवन ही बदल गया। पश्चिम बंगाल के गौरांग बनर्जी दो बार नाथू-ला गए हैं। ये समुंद्र तल से 14 हज़ार फीट की ऊँचाई पर है। और खास बात ये है कि उन्होंने यह उपलब्धि lung transplant के बाद हासिल की। राजस्थान में सीकर के रामदेव सिंह जी को kidney transplant कराना पड़ा था। आज वे sporting activity में कमाल कर रहे हैं।

साथियो, आपको इस तरह के बहुत से प्रेरक उदाहरण देखने को मिल जाएँगे। इससे ये बात फिर साबित होती

है कि किसी एक की नेक पहल, ना जाने कितने लोगों की ज़िंदगी बदल सकती है। मैं उन सभी लोगों की हृदय से सराहना करता हूँ, जिन्होंने ऐसे नेक कार्य किए हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज़ादी के अमृत महोत्सव के दौरान मैंने लाल किले से पंच प्राणों की बात कही थी। उनमें से एक है- गुलामी की मानसिकता से मुक्ति। आज देश गुलामी के प्रतीकों को पीछे छोड़कर भारत की संस्कृति से जुड़ी चीज़ों को महत्त्व देने लगा है। इस दिशा में हमारे राष्ट्रपति भवन ने भी एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाया है। **कल यानी 23 फरवरी को राष्ट्रपति भवन में 'राजाजी उत्सव' मनाया जाएगा। इस अवसर पर राष्ट्रपति भवन के केन्द्रीय प्रांगण में सी. राजगोपालाचारी जी की प्रतिमा का अनावरण किया जाएगा। वे स्वतंत्र भारत के पहले भारतीय गवर्नर जनरल थे।** वे उन लोगों में थे, जिन्होंने सत्ता को पद की तरह नहीं, सेवा की तरह देखा। सार्वजनिक जीवन में उनका आचरण, आत्मसंयम और स्वतंत्र चिंतन आज भी हमें प्रेरित करता है। दुर्भाग्य से, आज़ादी के बाद भी राष्ट्रपति भवन में ब्रिटिश प्रशासकों की मूर्तियाँ तो लगी रहने दी गईं, लेकिन देश के महान सपूतों को जगह नहीं दी गई। **British architect Edwin Lutyens की प्रतिमा भी राष्ट्रपति भवन में लगी हुई थी। अब इस प्रतिमा के स्थान पर राजाजी की प्रतिमा लगाई जाएगी। राजाजी उत्सव के दौरान राजगोपालाचारी जी पर आधारित प्रदर्शनी भी लगेगी।** ये प्रदर्शनी 24 फरवरी से 1 मार्च तक चलेगी। मौका निकाल कर आप भी इसे देखने ज़रूर जाइएगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में, मैंने आपसे Digital Arrest पर विस्तार से बात की है। इसके बाद देश में Digital Arrest और Digital Fraud को लेकर

हमारे समाज में काफी जागरूकता आई, लेकिन अभी भी हमारे आसपास ऐसी घटनाएँ हो रही हैं, जो अक्षम्य हैं। निर्दोष लोगों को Digital Arrest और Financial Fraud का निशाना बनाया जा रहा है। कई बार पता चलता है कि किसी Senior Citizen की जीवनभर की कमाई ठग ली गई। कभी किसी उन पैसों की ठगी हो जाती है, जो उसने बच्चों की फीस जमा करने के लिए बचाए थे। कारोबारियों से धोखाधड़ी की खबरें भी हमें देखने को मिलती हैं। कोई फोन करता है और कहता है– मैं एक बड़ा अधिकारी हूँ। आपको कुछ details share करनी होंगी। इसके बाद भोले-भाले लोग ऐसा ही कर बैठते हैं। इसीलिए आपका सतर्क रहना, जागरूक रहना बेहद ज़रूरी है।

साथियो, आप सभी KYC – Know Your Customer यानी अपने ग्राहक को जानें, इस process को तो जानते ही होंगे। कभी-कभी, जब आपको आपके बैंक से KYC update या Re-KYC करवाने के message आते हैं, तो मन में सवाल उठता है – मैंने तो पहले ही KYC करवा रखी है, तो ये फिर क्यों? मेरा आपसे आग्रह है, झुंझलाइए नहीं, ये आपके पैसे की सुरक्षा के लिए ही है। **हम सभी जानते हैं कि आजकल pension, subsidy, बीमा, UPI सब कुछ बैंक खाते से जुड़ा है। इसी वजह से बैंक समय-समय पर Re-KYC करते हैं, ताकि आपका bank account सुरक्षित रहे।** हाँ, इसमें भी आपको एक बात याद रखनी है। जो अपराधी हैं, वो फर्ज़ी

call करते हैं, SMS और link भेजते हैं। **इसीलिए हमें सतर्क रहना है और ऐसे धोखेबाजों के झाँसे में नहीं आना है। KYC या Re-KYC केवल अपने बैंक की शाखा या आधिकारिक App और authorised medium से ही कराएँ।** OTP, आधार नंबर या बैंक खाते संबंधी जानकारी किसी को भी न दें और **सबसे अहम बात, अपने password को समय-समय पर ज़रूर बदलते रहें। जैसे हर मौसम के साथ खान-पान बदल जाता है, पहनावा भी बदल जाता है, वैसे ही नियम बना लीजिए कि हर कुछ दिन में आपको अपना password भी बदल लेना है।**

साथियो, हाल ही में भारतीय रिज़र्व बैंक ने इन्हीं विषयों पर वित्तीय साक्षरता सप्ताह का आयोजन किया था। वित्तीय साक्षरता का ये अभियान अब पूरे वर्ष जारी रहेगा। इसलिए भारतीय रिज़र्व बैंक के message का ध्यान रखें और अपनी KYC updated रखें।

याद रखिए- सही KYC, समय पर Re-KYC करें

खाता सुरक्षित,

बनें सशक्त नागरिक।

क्योंकि सशक्त नागरिकों से ही बनता है मज़बूत और आत्मनिर्भर भारत।

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे किसान केवल अन्नदाता नहीं हैं। वे धरती के सच्चे साधक हैं। मिट्टी को सोना बनाना क्या होता है, ये कोई हमारे किसानों से सीखे और **हमारा आज का किसान तो परम्परा और technology, दोनों को साथ लेकर चल रहा है और मुझे ये देखकर खुशी होती है कि हमारे किसान अब सिर्फ उत्पादन नहीं, बल्कि गुणवत्ता, value**

addition और नए बाज़ारों पर भी ध्यान दे रहे हैं। ओडिशा में हिरोद पटेल नाम के एक युवा किसान से जुड़ी जानकारी वाकई बहुत प्रेरक है। करीब आठ साल पहले तक वे अपने पिता शिव शंकर पटेल के साथ पारम्परिक ढंग से धान की खेती करते थे लेकिन उन्होंने खेती को नए नज़रिये से देखना शुरू किया। अपने खेत के तालाब के ऊपर उन्होंने मज़बूत जालीदार ढाँचा बनाया। उस पर बेल वाली सब्जियाँ उगाई, तालाब के चारों ओर केले, अमरूद और नारियल लगाए और तालाब में मछली पालन भी शुरू किया। यानी एक ही जगह पारम्परिक खेती भी हो रही है, सब्जी भी, फल भी, मछली भी। इससे ज़मीन का बेहतर उपयोग हुआ, पानी की बचत हुई और अतिरिक्त आमदनी भी मिली। आज दूर-दूर से किसान उनका model देखने आते हैं।

साथियो, केरल के त्रिसूर ज़िले में एक गाँव ऐसा है, जहाँ एक ही खेत में 570 तरह की धान की किस्में लगाई जाती हैं। इसमें स्थानीय किस्में भी हैं, हर्बल किस्में भी हैं और दूसरे राज्यों से लाई गई प्रजातियाँ भी हैं। ये केवल खेती नहीं, बीजों की विरासत को बचाने का महा अभियान है। हमारे किसानों की मेहनत का असर आँकड़ों में भी दिख रहा है। भारत आज दुनिया का सबसे बड़ा चावल उत्पादक देश बन चुका है। 15 करोड़ टन से अधिक चावल का उत्पादन- ये छोटी उपलब्धि नहीं है। हम अपनी ज़रूरतें पूरी कर रहे हैं और दुनिया की food basket में योगदान भी दे रहे हैं।

साथियो, अब तो कृषि उत्पाद हवाई मार्ग से भी ज़्यादा आसानी से विदेश पहुँच रहे हैं। कर्नाटक के नंजनगुड केले, मैसूरु पान के पत्ते और इंडी नींबू को मालदीव भेजा गया। ये उत्पाद अपने स्वाद और गुणवत्ता के लिए जाने जाते हैं और इन्हें GI टैग भी मिला है। आज का किसान quality भी चाहता है,

quantity भी बढ़ा रहा है और अपनी पहचान भी बना रहा है।

मेरे प्यारे देशवासियो, पिछले वर्ष, इसी समय महाकुम्भ की अद्‌भुत तस्वीरें आपको ज़रूर याद होंगी। संगम के तट पर उमड़ता जनसागर, आस्था का अथाह प्रवाह और स्नान के उस पावन क्षण में, जैसे भारत अपनी सनातन चेतना से साक्षात्कार कर रहा था। साथियो, महाकुम्भ की वही धारा, वही माघ का महीना, वही श्रद्धा का स्वर, जब उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ता है, तो एक नई पहचान ले लेता है।

साथियो, केरल की धरती पर, भारतप्पुझा नदी के किनारे तिरुनावाया में सदियों पुरानी एक परम्परा रही है – मामंगम। इसे कई लोग महा माघ महोत्सव या केरल कुम्भ भी कहते हैं। माघ के महीने में पवित्र नदी में स्नान और उस क्षण को जीवन का अमिट स्मरण बना लेना, यही इसकी आत्मा है। समय के साथ यह परम्परा जैसे ओझल हो गई थी। करीब ढाई-सौ वर्षों तक यह आयोजन उसी भव्यता में नहीं हुआ था जैसे पहले हुआ करता था। लेकिन आज अपनी विरासत को फिर से पहचान रहे हमारे देश में इतिहास ने फिर करवट ली है। **इस बार बिना किसी बड़ी घोषणा के केरल कुम्भ का सफल आयोजन हुआ। लोगों ने इसके बारे में एक-दूसरे को बताया, कानों-कान बात पहुँचती गई और देखते ही देखते श्रद्धालु तिरुनावाया पहुँचने लगे।**

साथियो, महाकुम्भ हो या केरल कुम्भ, यह केवल स्नान का पर्व नहीं है। यह स्मृति का जागरण है। यह संस्कृति का पुनरस्मरण है। **उत्तर से दक्षिण तक, नदियाँ भले अलग हों, किनारे भले**

अलग हों, पर आस्था की धारा एक ही है - यही भारत है।

साथियो, हमारे देश में ऐसे लोग हमेशा जनता के दिलों में बसे रहते हैं जिन्होंने समाज के कल्याण के लिए काम किया होता है, जिन्होंने अपने नेक कार्यों में जनता को प्राथमिकता दी होती है। अम्मा जयललिता जी ऐसी ही एक लोकप्रिय लीडर थीं। 24 फरवरी उनके जन्मदिन का अवसर होता है। तमिलनाडु के लोगों का उनसे लगाव कितना गहरा था, यह मुझे आज भी राज्य के दौरे में दिखता है। अम्मा जयललिता जी का ज़िक्र होते ही, तमिलनाडु के लोगों के चेहरे खिल उठते हैं। **हमारी नारी शक्ति का जुड़ाव तो उनसे और विशेष रहा है। ऐसा इसलिए भी है, क्योंकि सरकार में रहते हुए उन्होंने माताओं-बहनों और बेटियों के लिए कई सराहनीय प्रयास किए। राज्य में कानून-व्यवस्था को दुरुस्त रखने के लिए भी उन्होंने बहुत ठोस कदम उठाए थे। देशभक्ति की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी थी।** इसके साथ ही, भारत की सांस्कृतिक विरासत पर उन्हें बहुत गर्व था। अम्मा जयललिता जी के साथ हुई हर मुलाकात, हर प्रकार की बातचीत मेरे मन में आज भी ताज़ा है। वे गुजरात में 2002 और 2012 में हुए मेरे दो शपथ ग्रहण समारोह में भी शामिल हुई थीं। जब हम दोनों अपने-अपने राज्य में मुख्यमंत्री थे, तब good governance जैसे विषयों पर अक्सर हमारे बीच बातचीत होती रहती थी। उनकी सोच बिल्कुल स्पष्ट थी, और विचार बेहद सुलझे हुए। यह उनकी एक बड़ी खासियत थी। कई वर्ष पहले उन्होंने पोंगल के पावन अवसर पर मुझे lunch के लिए चेन्नई आमंत्रित किया था। स्नेह से भरा उनका वो भाव मेरे लिए अविस्मरणीय रहेगा। **एक बार फिर मैं उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।**

जयललिता अवरगलक्क,
येन निनैवाजंलि-गल,

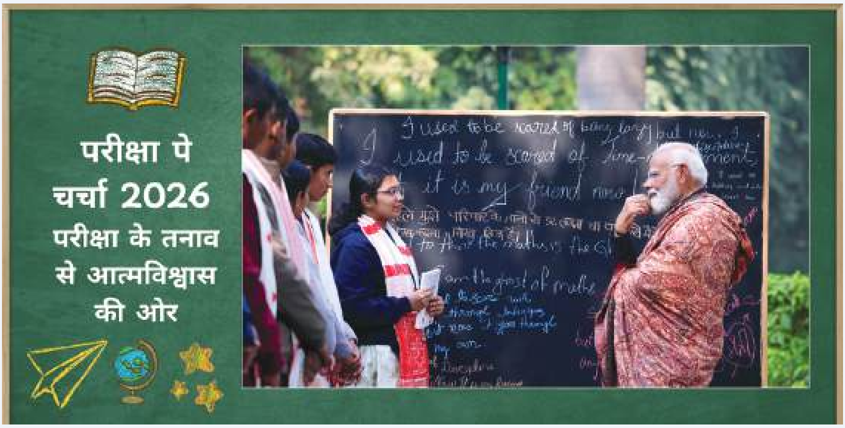

समुदायत्तिर्क्कु,

अवर आट्रिय सेवै येंड्रूम निनैविल इरुक्कुम।

(**English Translation: My tributes to Jayalalitha, Her services to the people will always be remembered**.)

मेरे प्यारे देशवासियो, अब मैं बात करूंगा अपने प्यारे, छोटे होनहार बच्चों से, उन बच्चों से जिनका इस समय exam चल रहा है। मुझे उम्मीद है, आपने इस महीने की शुरुआत में 'परीक्षा पे चर्चा' देखी होगी और आपको उससे कुछ सीखने को भी मिला होगा। लेकिन, मैं फिर भी पूछूँगा पढ़ाई की ज़्यादा tension तो नहीं ले रहे हैं न आप?

मेरे प्यारे बच्चो, आप तो exam warriors हैं। मुझे विश्वास है, आप सभी पूरे मन से इम्तिहान की तैयारियों में लगे होंगे। हाँ, ऐसे समय में मन में थोड़ी शंका आना भी स्वाभाविक है। कभी लगता है, सब याद रहेगा या नहीं रहेगा। कभी लगता है, समय कम तो नहीं पड़ जाएगा ना! ये भाव हर पीढ़ी के बच्चों ने महसूस किए हैं, आप अकेले नहीं हैं। **आप याद रखिए, आपका मूल्य आपकी marksheet से तय नहीं होता। इसलिए खुद पर भरोसा रखिए। जो पढ़ा है, उसे पूरे मन से लिखिए। और जो नहीं आया, उस एक सवाल को अपने मन पर हावी मत होने दीजिए। और एक बात, अपने माता-पिता और शिक्षकों से बात करते रहिए। वे आपके नंबरों से नहीं, आपके प्रयास से आपकी पहचान करते हैं, वो आपकी मेहनत से खुश रहते हैं। मुझे पूरा भरोसा है कि आप परीक्षा में भी सफल होंगे और अपने जीवन में भी सफलता की नई ऊँचाई प्राप्त करेंगे।**

साथियो, इन दिनों रमज़ान चल रहा है। मैं इस पवित्र महीने के लिए सभी को शुभकामनाएँ देता हूँ। कुछ ही दिनों बाद होली का पर्व भी आ रहा है। यानी रंग, गुलाल और हँसी-खुशी से भरा

समय दस्तक देने वाला है। आप सभी अपने परिवार और अपनों के साथ खुशी के साथ सारे त्योहार मनाएँ। **और हाँ, कुछ मंत्र हमेशा याद रखें, जैसे vocal for local.** हमारे होली के त्योहारों में या अन्य कोई भी त्योहार में अनेक ऐसे साज़ो–सामान घुस गए हैं, जो विदेशी हैं। इन्हें त्योहारों से दूर रखिए, होली से भी दूर रखिए, स्वदेशी अपनाइये। **जब आप स्वदेशी खरीदते हैं तो देश को आत्मनिर्भर बनाने के अभियान में भी मदद करते हैं।**

साथियो, मुझे हर महीने 'मन की बात' के लिए आपके ढेरों सुझाव मिलते हैं। आपके भेजे गए संदेशों से हमें देश के कोने–कोने में छिपी अद्भुत प्रतिभाओं के बारे में पता चलता है। निजी स्वार्थ से उठकर समाज के लिए कुछ करने की अनेक प्रेरणादायी गाथाएँ आपके माध्यम से देशभर के लोगों तक पहुँची हैं। आप ऐसे ही अपने प्रयास जारी रखें। मुझे आपके संदेशों का इंतज़ार रहेगा। मैं एक बार फिर आपको और आपके परिवार को आने वाले त्योहारों की अनेक–अनेक शुभकामनाएँ देता हूँ। बहुत–बहुत धन्यवाद। नमस्कार।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

भारत एआई इम्पैक्ट समिट 2026

समावेशी विकास के लिए भारत की एआई यात्रा

नई दिल्ली के भारत मंडपम में 16 से 20 फरवरी तक आयोजित *इंडिया-एआई इम्पैक्ट समिट* 2026 ने वैश्विक तकनीकी परिदृश्य में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर स्थापित किया। विकासशील देशों में आयोजित होने वाले पहले प्रमुख एआई शिखर सम्मेलन के रूप में, इसने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति विश्व की धारणा में एक मौलिक बदलाव का संकेत दिया। 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' के गहन विषय के अंतर्गत, शिखर सम्मेलन कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अमूर्त भय से आगे बढ़कर व्यापक विकास के परिणामों पर केंद्रित रहा। इसने डिजिटल उपकरणों के मात्र उपभोक्ता से संप्रभु एआई में वैश्विक अग्रणी के रूप में भारत के विकास को प्रदर्शित किया। शिखर सम्मेलन का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि नवाचार के लाभ समाज के सभी वर्गों में समान रूप से वितरित हों।

आधारभूत स्तम्भः तीन सूत्र

यह शिखर सम्मेलन तीन मार्गदर्शक सिद्धांतों या सूत्रों पर आधारित था। इन्होंने मानव-केंद्रित तकनीकी भविष्य के लिए भारत के दृष्टिकोण को परिभाषित किया। इन सिद्धांतों को यह सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था कि एआई असमानता को और बढ़ाने के बजाय सशक्तीकरण के एक उपकरण के रूप में कार्य करे।

- **People (लोग)** : पीपुल सूत्र कृत्रिम बुद्धिमत्ता को सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करते हुए, गरिमा को संरक्षित करते हुए और इसके डिज़ाइन और उपयोग में समावेशिता सुनिश्चित करते हुए मानव प्रगति की शक्ति के रूप में देखता है। यह इस बात की पुष्टि करता है कि प्रौद्योगिकी मानव-केंद्रित रहनी चाहिए, जन-केंद्रित विकास को बढ़ावा देना चाहिए और साथ ही सुरक्षा, विश्वास और साझा लाभ को बनाए रखना चाहिए।
- **Planet (ग्रह)** : प्लैनेट सूत्र में ऐसी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का आह्वान किया गया है जो संसाधनों का उपयोग कम करते हुए ज़िम्मेदारीपूर्वक नवाचार को बढ़ावा दे और जलवायु परिवर्तन से निपटने की क्षमता और पर्यावरण संरक्षण को गति दे। यह इस बात पर बल देता है कि तकनीकी प्रगति को ग्रह के प्रबंधन के अनुरूप होना चाहिए, जहाँ यह सुनिश्चित हो कि एआई वैश्विक स्थिरता को कमज़ोर करने के बजाय उसे मज़बूत करे।
- **Progress (प्रगति)** : प्रोग्रेस सूत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को समावेशी विकास के एक इंजन के रूप में देखा गया है। इतना ही नहीं, इसके लाभों को वैश्विक विकास सम्बंधी प्राथमिकताओं और अवसरों की समान पहुँच के अनुरूप किया गया है। यह प्रमुख कृत्रिम बुद्धिमत्ता संसाधनों के लोकतंत्रीकरण और स्वास्थ्य, शिक्षा, शासन और कृषि जैसे क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक प्रगति को गति देने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस्तेमाल पर बल देता है।

एआई के प्रभाव के सात चक्र

इन उच्चस्तरीय विचारों को व्यावहारिक नीतियों में बदलने के लिए, शिखर सम्मेलन को सात विषयगत कार्य समूहों के इर्द–गिर्द आयोजित किया गया था, जिन्हें 'चक्र' कहा गया है। इन समूहों के माध्यम से विशिष्ट चुनौतियों से निपटने के लिए वैश्विक विशेषज्ञों, नीति निर्माताओं और उद्योग जगत के दिग्गजों को एक साथ लाने में मदद मिली:

1. **मानव पूँजी**: यह चक्र लक्षित कौशल विकास के माध्यम से एक समान एआई कौशल को फिर से प्रदान करने की प्रणाली के निर्माण पर केंद्रित है। भारत के लिए यह राष्ट्रीय विकास प्राथमिकताओं के अनुरूप एआई अर्थव्यवस्था के लिए कार्यबल की तैयारी को मज़बूत करता है।
2. **सामाजिक सशक्तीकरण के लिए समावेशन** : यह चक्र साझा एआई समाधानों और व्यापक मॉडलों के माध्यम से समावेशी भागीदारी को सक्षम बनाने पर केंद्रित है। यह भारत में नागरिक–केंद्रित एआई समाधानों के वितरण में सहायता करता है और अंतिम सीमा तक सेवाओं को मज़बूत बनाता है।
3. **सुरक्षित और भरोसेमंद एआई**: यह चक्र ज़िम्मेदार एआई के वैश्विक सिद्धांतों को व्यावहारिक, अंतर–संचालनीय सुरक्षा और शासन ढाँचे में परिवर्तित करने पर केंद्रित है। भारत के लिए यह घरेलू एआई शासन को मज़बूत करता है, सार्वजनिक प्लेटफार्मों पर एआई के सुरक्षित इस्तेमाल का समर्थन

करता है और नवाचार को सक्षम बनाते हुए जनविश्वास का निर्माण करता है।

4. **लचीलापन, नवाचार और दक्षताः** यह चक्र बड़े पैमाने पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियों द्वारा उत्पन्न बढ़ती पर्यावरणीय और संसाधन सम्बंधी चुनौतियों के समाधान पर केंद्रित है, जो वैश्विक कृत्रिम बुद्धिमत्ता विभाजन को और गहरा करने का जोखिम पैदा करती हैं। भारत के लिए, यह सतत कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपनाने का समर्थन करता है। साथ ही, यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास पर्यावरणीय रूप से ज़िम्मेदार और सामाजिक रूप से न्यायसंगत बना रहे।

5. **विज्ञानः** यह चक्र एआई का उपयोग करके डेटा, कंप्यूटर और अनुसंधान क्षमता तक पहुँच में मौजूद गहरी असमानताओं को दूर करते हुए नए आविष्कारों में तेज़ी लाने पर केंद्रित है। भारत के लिए, यह अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करता है, स्वास्थ्य, कृषि और जलवायु के क्षेत्र में समाधानों को गति देता है और भारत को वैश्विक वैज्ञानिक प्रगति में एक सक्रिय योगदानकर्ता के रूप में स्थापित करता है।

6. **एआई संसाधनों का लोकतंत्रीकरणः** यह चक्र एक वैश्विक एआई इकोसिस्टम की परिकल्पना करता है जहाँ एआई विकास के मूलभूत कारकों तक सभी की पहुँच समान और सहज हो। भारत के लिए यह स्टार्टअप, अनुसंधानकर्ताओं और सार्वजनिक संस्थानों के लिए पहुँच का विस्तार करता है; साथ ही, वैश्विक एआई मूल्य शृंखलाओं में समान भागीदारी सुनिश्चित करता है।

7. **आर्थिक विकास और सामाजिक हित के लिए एआईः** यह चक्र वास्तव में समावेशी विकास के लिए एआई की क्षमता का दोहन करने के दृष्टिकोणों की पड़ताल करता है, उच्च प्रभाव वाले उपयोग के मामलों की पहचान करता है और उनका समर्थन करता है जो आर्थिक विकास और सामाजिक हित दोनों के लिए एआई के उदाहरण बन जाते हैं।

भारत का एआई इंफ्रास्ट्रक्चर और इंडिया एआई मिशन

यह शिखर सम्मेलन इंडिया एआई मिशन की प्रगति पर रिपोर्ट प्रस्तुत करने का एक मंच था। इंडिया एआई मिशन एक व्यापक राष्ट्रीय पहल है जिसे 10,300 करोड़ रुपये से अधिक के भारी बजट के साथ शुरू किया गया है। सरकार ने 2026 की शुरुआत तक राष्ट्रीय क्षमता निर्माण में महत्त्वपूर्ण प्रगति दर्ज की है। वर्तमान में, मिशन ने घरेलू नवप्रवर्तकों को रियायती दरों पर किफायती कंप्यूटिंग क्षमता प्रदान करने के लिए 38,000 से अधिक जीपीयू सफलतापूर्वक उपलब्ध कराए हैं। शिखर सम्मेलन के दौरान, इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय ने राष्ट्रीय स्वायत्त एआई स्टैक को और मज़बूत करने के लिए अतिरिक्त 20,000 उच्च-स्तरीय जीपीयू की खरीद की घोषणा की।

भारत की रणनीति एआई को 'खुला, किफायती और सुलभ' बनाने पर केंद्रित है। 'भाषिणी' जैसा मंच भाषा की बाधाओं को तोड़ रहा है। एक एआई चैटबॉट *किसान ई-मित्र* जो 11 क्षेत्रीय भाषाओं में किसानों की मदद करता है, यह अनौपचारिक कार्यबल के जीवन में एआई के एकीकरण को दर्शाता है। वर्ष 2025 में, नीति आयोग की एक रिपोर्ट 'समावेशी सामाजिक विकास के लिए एआई' में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि एआई में 49 करोड़ अनौपचारिक श्रमिकों के लिए आवश्यक वित्तीय और सामाजिक सेवाओं तक पहुँच बढ़ाकर भारत को सशक्त बनाने की क्षमता है।

वैश्विक नेतृत्व और सहयोगात्मक परिणाम

शिखर सम्मेलन का समापन एआई के प्रभाव पर नई दिल्ली घोषणापत्र के साथ हुआ। नई दिल्ली घोषणापत्र 92 देशों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों द्वारा समर्थित एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है। यह घोषणापत्र एआई के लाभों को अधिक समान रूप से साझा करने की आवश्यकता पर बढ़ते वैश्विक मत को दर्शाता है। शिखर

सम्मेलन में घोषित प्रमुख सहयोगात्मक उपलब्धियों में शामिल हैंः

1. **समानता-आधारित एआई परिवर्तन प्लेबुक** : अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के साथ साझेदारी में विकसित यह मार्गदर्शिका एआई-एकीकृत उद्योगों में परिवर्तन के दौरान श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए देशों को एक रोडमैप प्रदान करती है।
2. **एआई के लोकतांत्रिक प्रसार के लिए चार्टरः** 22 देशों द्वारा समर्थित, इस चार्टर का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी एक राष्ट्र या कम्पनी एआई प्रौद्योगिकी के मूलभूत घटकों पर एकाधिकार न कर सके।
3. **ग्लोबल यूथ चैलेंज (YUVAi) और AI by HERः** इन पहलों का उद्देश्य ज़मीनी स्तर पर नवाचार को बढ़ावा देना और यह सुनिश्चित करना था कि युवा और महिला नेतृत्व वाले स्टार्टअप वैश्विक एआई आपूर्ति श्रृंखला में एकीकृत हों।

निष्कर्षः एक समाज-केंद्रित संरचना

इंडिया-एआई इम्पैक्ट समिट 2026 ने साबित कर दिया कि विकासशील देशों के लिए एआई कोई विलासिता नहीं बल्कि समावेशी विकास का एक महत्त्वपूर्ण इंजन है। एआई प्रतिस्पर्धा में वर्तमान में वैश्विक-स्तर पर तीसरे स्थान पर मौजूद अपने विशाल प्रतिभा भंडार और मज़बूत विकास नीति (DPI) का लाभ उठाते हुए, भारत खुद को 'एआई नवाचार के वैश्विक केंद्र' के रूप में स्थापित कर रहा है। यह यात्रा एक 'समाज-केंद्रित संरचना' द्वारा निर्धारित है जो प्रौद्योगिकी और आम नागरिक के बीच की खाई को पाटने का प्रयास करती है। शिखर सम्मेलन के समापन पर यह संदेश स्पष्ट थाः एआई का भविष्य समावेशी, नैतिक और सबसे बढ़कर मानव-केंद्रित होना चाहिए।

भारत एआई इम्पैक्ट समिट 2026

नई दिल्ली में भारत मंडपम में आयोजित भारत एआई इम्पैक्ट समिट 2026 विकासशील देशों में एआई अर्थात् कृत्रिम मेधा के प्रभाव के बारे में पहली बार आयोजित शिखर सम्मेलन होने के नाते बड़ी उपलब्धि माना जा सकता है।

'सर्वजन हिताय : सर्वजन सुखाय' शीर्षक से आयोजित इस शिखर सम्मेलन में 100 से अधिक देशों के नेता कृत्रिम मेधा के प्रभाव पर वैश्विक चर्चा के लिए पहुँचे। इसमें केवल विज़न पर ही नहीं बल्कि इसके स्पष्ट प्रभाव पर विचार-विमर्श किया गया।

इस आयोजन के तीन मार्गदर्शक सूत्र थे – जन (लोग), ग्रह (पृथ्वी) और प्रगति, तथा इसे विविध विषयों पर आधारित सात चक्रों में संचालित किया गया था। कुल मिलाकर, इस सम्मेलन में टेक्नोलॉजी (प्रौद्योगिकी) को लोकतांत्रिक अर्थात् 'सबके लिए' उपलब्ध कराने का भारत का संकल्प व्यक्त किया गया।

JioShiksha Classroom
Zero Burden. Personalized Learning. Infinite Knowledge
10:05

AI
IMPACT
SUMMIT
AI
IMPACT
SUMMIT
AI
IMPACT
SUMMIT

देबजानी घोष
विशिष्ट अध्येता
नीति आयोग

भारत की साहसिक एआई महत्त्वाकांक्षा

1.40 अरब लोगों के लिए मेधा का लोकतंत्रीकरण

कृत्रिम मेधा को लेकर भारत की दृष्टि एक शाश्वत सभ्यतागत सत्य से प्रेरित है कि ज्ञान निजी सम्पत्ति नहीं अपितु मानव की समृद्धि के लिए विमर्श, परिष्कार और प्रसार की साझा विरासत है। भारतीय दर्शन ने वेदों से लेकर आज तक, क्षमता के साथ संयम, सृजनशीलता के साथ दूरदृष्टि और विस्तार के साथ उत्तरदायित्व को जोड़ा है। इसका मानना है कि शक्ति, नैतिक रूप से कभी तटस्थ नहीं होती।

आज भारत, इतिहास की सबसे महत्त्वाकांक्षी तकनीकी यात्राओं में से एक- अपने 1.4 अरब नागरिकों के लिए कृत्रिम मेधा के लोकतंत्रीकरण की ओर अग्रसर है। जहाँ दुनिया में एआई कुछ हाथों में सिमटती दिख रही है वहीं भारत प्राचीन ज्ञान, लोकतांत्रिक मूल्यों और समावेशी विकास पर आधारित अलग राह चुन रहा है।

यह दृष्टि India AI Impact Summit 2026 (16–20 फ़रवरी, नई दिल्ली) में स्पष्ट उजागर हुई जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एआई को एक गहन सभ्यतागत पल बताया। उन्होंने मानव-केंद्रित ढाँचे M.A.N.A.V. Vision का अनावरण किया। 'MANAV' की परिभाषा है:

- नैतिक एवं आचार-आधारित प्रणाली: सुदृढ़ नैतिक सिद्धांतों से संचालित एआई।
- उत्तरदायी शासन: पारदर्शी नियम और सशक्त निगरानी व्यवस्था।
- राष्ट्रीय सम्प्रभुता: डेटा जिसने बनाया उस पर उसी का अधिकार।
- सुलभ और समावेशी: एआई, सशक्तीकरण का माध्यम है न कि एकाधिकार।
- वैध और प्रमाणित: विधिसम्मत एवं सत्यापन योग्य प्रणालियाँ।

यह रूपरेखा पुनः पुष्टि करती है कि ज्ञान का उद्देश्य मानवता की सेवा करना है, उस पर अधिकार जमाना नहीं।

एआई क्रांति चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ी है: पहले चरण में सूचना का डिजिटलीकरण हुआ; दूसरे में कम्प्यूट और मॉडलों का विस्तार कर बड़ी उपलब्धियाँ हासिल की गईं। अब हम तीसरे चरण– मेधा के लोकतंत्रीकरण में प्रवेश कर रहे हैं जहाँ ज्ञान और निर्णय सम्बंधी सहयोग, रियल टाइम में हर नागरिक तक पहुँचकर कौशल, उत्पादकता, शासन और आजीविका

को सशक्त करता है।

भारत में यह परिवर्तन ऊपर से नीचे नहीं, बल्कि नीचे से ऊपर की ओर अग्रसर है। लोगों की जगह किसी और को लाने के बजाय, भारत ऐसी एआई विकसित कर रहा है जो मानव क्षमता बढ़ाए और विशेषज्ञता की कमी वाले क्षेत्रों के बीच की खाई पाटे। उदाहरण के तौर पर, ग्रामीण भारत में पंचायतों में सचिवों की कमी के बीच झारखंड में *एआई सचिव जी* जैसे टूल्स का संचालन किया गया जोकि सरपंचों को सरकारी योजनाओं, अनुपालन की आवश्यकताओं, निधि प्रवाह और प्रशासनिक प्रक्रियाओं पर त्वरित, सन्दर्भ-आधारित और बहुभाषी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इससे शासन की सबसे छोटी इकाई तक रियल टाइम में कृत्रिम मेधा सीधी पहुँचती है जिससे स्थानीय नेतृत्व, सूचना-आधारित निर्णय लेने में सशक्त होता है और ज़मीनी लोकतंत्र को मज़बूती मिलती है।

कृषि क्षेत्र में एआई उपकरणों का उपयोग पशुओं के स्वास्थ्य की निगरानी, रोग की आशंका का पूर्वानुमान लगाने और डेयरी किसानों को सरल व उपयोगी सुझाव देने के लिए किया जा रहा है ताकि वे उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकें।

स्वास्थ्य क्षेत्र में एआई की मदद से निदान सम्बंधी अग्रिम पंक्ति के कर्मियों को उच्च-जोखिम वाली गर्भावस्था और दीर्घकालिक रोगों की समय रहते पहचान करने में मदद मिल रही है, जिससे सबसे निचले-स्तर पर जीवन बचाया जा रहा है। हम सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी एआई का उपयोग कर रहे हैं। यह प्राचीन पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण, व्याख्या और अनुवाद करके दुर्लभ ज्ञान को भावी पीढ़ियों के लिए सुलभ बना रहा है।

ये कोई इक्का-दुक्का या अलग-थलग प्रयोग नहीं, बल्कि एक मूल विश्वास की अभिव्यक्ति है कि एआई कुछ चुने हुए वर्गों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। यह व्यापक रूप से वितरित होना चाहिए ताकि हर व्यक्ति को भविष्य में सुलभता, सशक्तीकरण और सहभागिता का अधिकार मिल सके।

मेरा मानना है कि भारत की एआई यात्रा तीन अटल सिद्धांतों पर आधारित है:

1. **मानव-प्रथम** : एआई मानव निर्णय का स्थान नहीं लेता, बल्कि उसे सशक्त करता है। इससे सरपंच अधिक प्रभावी, नर्स अधिक आत्मविश्वासी और किसान अधिक जागरूक होता है।

2. **विश्वास ही आधार** : विशाल जनसंख्या के स्तर पर पारदर्शिता, व्याख्यात्मकता, सुरक्षा और जवाबदेही अनिवार्य हैं। नागरिकों को भरोसा होना चाहिए कि प्रणालियाँ उनके कल्याण और गरिमा के लिए हैं।

3. **साझा समृद्धि** : भारत की भाषायी, भौगोलिक और सामाजिक-आर्थिक विविधता को देखते हुए समावेशी स्वरूप होना आवश्यक है। एआई अवसरों का विस्तार करे ना कि विभाजन को और गहरा।

हर नागरिक में क्षमता, हर क्षेत्र में उत्पादकता और हर आजीविका में गरिमा स्थापित करने की इस दृष्टि से वर्ष 2047 तक 'विकसित भारत' बनने के हमारे संकल्प को ऊर्जा मिलती है।

मेरे लिए विकसित भारत वह है जहाँ हर नागरिक को आसानी से मेधा उपलब्ध हो– रियल-टाइम सलाह से किसान की पैदावार बढ़े; समय रहते निदान होने से जीवन बचे; पंचायत के डेटा-आधारित निर्णय शासन के सबसे निचले पायदान को सशक्त करें; और एआई-संचालित कौशल मार्गदर्शन युवाओं के अवसरों को कई गुना बढ़ाए। यह वह भारत है जहाँ मेधा, आर्थिक प्रगति का मूल इनपुट बनकर समावेशी और सतत विकास के

लिए एक शक्तिशाली राष्ट्रीय गुणक सिद्ध हो और हम इस दृष्टि को संस्थागत तथा तकनीकी संरचनाओं से दृढ़ समर्थन दे रहे हैं।

इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 में प्रमुख स्वदेशी फाउंडेशन मॉडल आरम्भ किए गए जिनमें 'सर्वम' एआई के 30बी और 105बी पैरामीटर मॉडल शामिल हैं, जो बहुभाषी और रियल-टाइम अनुप्रयोगों के अनुकूल हैं। साथ ही BharatGen का परम 2 भी प्रस्तुत किया गया जो 17बी पैरामीटर वाला, 22 से अधिक भारतीय भाषाओं और मल्टीमॉडल क्षमता के साथ बहुभाषी Mixture-of-Experts मॉडल है।

ये सम्प्रभु प्रणालियाँ केवल प्रतीकात्मक नहीं हैं; वे यह सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं कि मेधा सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील, भाषायी रूप से समावेशी और रणनीतिक रूप से आत्मनिर्भर हों। ये केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि ग्लोबल साउथ (विकासशील देश) के लिए भी मार्गदर्शक मॉडल प्रस्तुत करती हैं जो लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप जनसंख्या-स्तरीय कृत्रिम मेधा (एआई) विकसित करना चाहते हैं।

एक ऐसे विश्व में, जहाँ एआई पर बहस अक्सर शक्ति-संकेंद्रण और भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा तक सीमित रहती है, भारत एक वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करता है। लोकतांत्रिक मूल्य और उन्नत तकनीक परस्पर विरोधी नहीं बल्कि एक-दूसरे को सुदृढ़ करते हैं। समावेशन, नवाचार को सीमित न करके उसे गति देता है। जब विश्वास, एक अतिरिक्त तत्त्व न होकर आधारभूत संरचना बन जाए तो वह जनसंख्या-स्तर पर व्यापक प्रभाव और विस्तार सुनिश्चित करता है।

हज़ारों वर्ष पहले भारतीय परम्पराओं में प्रश्न उठा था– ज्ञान किसके लिए है और उसे किसकी सेवा करनी चाहिए? एल्गोरिद्म के इस युग में भारत ने इसका एक नया उत्तर दिया है। M.A.N.A.V. विज़न और मेधा के लोकतंत्रीकरण के माध्यम से एआई अब कुछ लोगों का विशेषाधिकार नहीं रहेगा– यह अनेक लोगों के सशक्तीकरण का माध्यम बनेगा।

इस प्रयास का नेतृत्व करते हुए भारत न केवल विकसित भारत की ओर अग्रसर है अपितु विश्व के लिए एक अधिक मानवीय और समावेशी भविष्य की दिशा भी प्रशस्त कर रहा है।

संजय मल्होत्रा
गवर्नर
भारतीय रिज़र्व बैंक

सुविधा, विश्वास और सतर्कता

डिजिटल युग में सुरक्षा का मंत्र

पारम्परिक रूप से बैंकिंग का आशय बैंक शाखा में लाइन में खड़ा होकर प्रतीक्षा करना, फॉर्म भरना तथा अपनी बारी की प्रतीक्षा करना था। वर्तमान युग में इस परिदृश्य में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। आज धन का ट्रांसफर क्षणों में संभव है; बिलों का भुगतान घर बैठे किया जा सकता है; अभिभावक दूरस्थ नगरों में अध्ययनरत अपने बच्चों को तत्काल धन प्रेषित कर सकते हैं; लघु व्यवसायी क्यूआर कोड के माध्यम से सहजता से भुगतान स्वीकार कर सकते हैं; तथा वरिष्ठ नागरिक बिना घर से बाहर निकले अपने खाते की शेष राशि की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

इस डिजिटल परिवर्तन ने वित्तीय सेवाओं को तीव्र, सुलभ एवं समावेशी बनाया है। वस्तुतः इसने बैंकिंग सेवाओं को ग्राहक के हाथों तक पहुँचा दिया है। तथापि, इस सुविधा के साथ एक आवश्यक सावधानी भी निहित है, क्योंकि यही सहजता डिजिटल माध्यमों के प्रति विश्वास को प्रभावित कर सकती है।

जो साधन हमारे जीवन को सरल बनाते हैं, उनका दुरुपयोग असामाजिक तत्वों द्वारा भी किया जा सकता है। ये तत्व व्यक्तियों की प्रवृत्तियों का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं, उनके विश्वास का लाभ उठाते हैं तथा भय, चिंता, लालच, असावधानी अथवा जागरूकता के अभाव जैसी मानवीय कमजोरियों का फायदा उठाते हैं। जैसे-जैसे डिजिटल बैंकिंग का दायरा बढ़ रहा है, इसके लाभों की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु जागरूकता एवं सतर्कता अत्यंत आवश्यक हो जाती है।

डिजिटल धोखाधड़ी

इंटरनेट अथवा अन्य डिजिटल माध्यमों के ज़रिए किए जाने वाले धोखों को व्यापक रूप से 'डिजिटल धोखाधड़ी' की श्रेणी में रखा जाता है। तथापि, यह केवल तकनीकी समस्या नहीं है; अधिकांशतः यह मानवीय व्यवहार से सम्बंधित है। ऐसे प्रकरण इसलिए सफल होते हैं क्योंकि व्यक्ति भ्रमित हो जाते हैं, न कि इसलिए कि तकनीक विफल हो जाती है।

वर्तमान समय में डिजिटल धोखाधड़ी के विविध

स्वरूप देखने को मिलते हैं, जिनकी शुरुआत प्रायः किसी संदेश, दूरभाष कॉल, वेब-लिंक, भ्रामक आश्वासन अथवा मिथ्या चेतावनी से होती है।

कई मामलों में धोखेबाज स्वयं को पुलिस अधिकारी के रूप में प्रस्तुत कर पीड़ित को धन अंतरण हेतु बाध्य करते हैं। इस क्रम में मादक पदार्थों की तस्करी, धन शोधन अथवा अवैध पार्सल जैसे निराधार आरोप लगाए जाते हैं। पीड़ित को घंटों, यहाँ तक कि कई दिनों तक वीडियो कॉल पर बनाए रखकर (जिसे प्रचलित रूप में 'डिजिटल अरेस्ट' कहा जाता है) उसे पूर्णतः अलग-थलग कर दिया जाता है तथा उस पर गहन मनोवैज्ञानिक दबाव डाला जाता है।

किसी अन्य व्यक्ति से यह कहते हुए संपर्क किया जा सकता है कि उसका बैंक खाता तुरंत KYC अपडेट न करने पर बंद कर दिया जाएगा। किसी और को आकर्षक ऑनलाइन ऑफर, उपहार, पार्ट-टाइम नौकरी या बिना जोखिम के ज्यादा मुनाफा देने वाले निवेश के झांसे में फंसाया जा सकता है। कुछ लोगों को मदद देने के बहाने कोई अनजान मोबाइल ऐप डाउनलोड करने या स्क्रीन शेयर करने पर भी धोखा दिया जाता है।

प्रत्येक मामले में, ठग लोगों की भावनाओं– डर, उत्साह, लालच, भ्रम और जल्दबाजी का फायदा उठाते हैं ताकि उनसे कोई कदम उठवाया जा सके। इसके बाद लोग ऐसी गलतियाँ कर बैठते हैं, जो वे सामान्य स्थिति में कभी नहीं करते।

डिजिटल सुरक्षा हेतु उपाय

भारत सरकार, भारतीय रिज़र्व बैंक तथा अन्य सार्वजनिक प्राधिकरण डिजिटल सिस्टम को अधिक सुरक्षित बनाने के लिए कई कदम उठा रहे हैं। सरकार द्वारा त्वरित शिकायत पंजीकरण एवं प्रत्युत्तर सुनिश्चित करने हेतु संस्थागत तंत्र स्थापित किए गए हैं। इंडियन साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर तथा नेशनल साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल नागरिकों को साइबर अपराधों की रिपोर्टिंग की सुविधा

प्रदान करते हैं। साइबर धोखाधड़ी के मामलों में हेल्पलाइन 1930 भी शुरू की गई है, ताकि तुरंत मदद मिल सके।

बैंकों एवं कुछ अन्य विनियमित वित्तीय संस्थाओं द्वारा दी जाने वाली सेवाओं एवं लेनदेन सम्बंधी कॉल के लिए समर्पित 1600 नंबर सीरीज़ निर्धारित की गई है, जिससे नागरिकों के लिए प्रामाणिक कॉल की पहचान करना सुगम हो सके, और वे नकली वेबसाइटों से बच सकें।

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा बैंकों के लिए विशिष्ट .bank.in डोमेन भी प्रारंभ किया गया है, जिससे ग्राहक वास्तविक बैंकिंग वेबसाइटों की पहचान कर सकें तथा भ्रामक समान रूप (लुकअलाइक) नकली वेबसाइटों से बच सकें।

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा वर्ष भर जन-जागरूकता अभियान संचालित किए जाते हैं, जिनका उद्देश्य देश के विभिन्न वर्गों तक पहुँच बनाना है। ये प्रयास भारतीय रिज़र्व बैंक में नागरिकों एवं संस्थाओं के विश्वास को सुदृढ़ करने के विज़न के अनुरूप हैं।

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा अंग्रेज़ी, हिंदी तथा 11 क्षेत्रीय भाषाओं में वित्तीय जागरूकता पुस्तिकाएँ भी जारी की गई हैं, जिनमें धोखाधड़ी के तरीके और उनसे बचने के उपाय बताए गए हैं।

सुरक्षा के दृष्टिकोण से एक अन्य महत्वपूर्ण उपाय केवाईसी (Know your Customer) है। यह संभावित धोखाधड़ी से निपटने का एक प्रभावी साधन है। बैंकों तथा अन्य विनियमित संस्थाओं के लिए यह अनिवार्य किया गया है कि वे अपने ग्राहकों की पहचान करें, उनकी जानकारी की पुष्टि करें, निरंतर समुचित सावधानी बरतें तथा ग्राहकों के लेनदेन की निगरानी करें। यह बैंक खातों के धोखाधड़ीपूर्ण अथवा अवैध गतिविधियों में दुरुपयोग की रोकथाम हेतु एक महत्त्वपूर्ण सुरक्षा उपाय है।

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा बैंकों को समय-समय पर केवाईसी रिकॉर्ड अपडेट (री-केवाईसी) करने का निर्देश दिया गया है। यह वित्तीय प्रणाली (जिसमें बैंकिंग प्रणाली भी सम्मिलित है) के दुरुपयोग जैसे मनी लॉन्ड्रिंग, आतंकवाद के वित्तपोषण तथा अन्य गैर-कानूनी गतिविधियों को रोकने में सहायक है। अतः यह ग्राहकों के हित में है कि वे अपना पता या अन्य जानकारी में हुए परिवर्तनों की सूचना अपने बैंक को समय पर दें तथा केवाईसी अपडेट करने के लिए बैंक द्वारा किए गए अनुरोधों का अनुपालन करें, जो कि एक बहुत आसान प्रक्रिया है।

उक्त विषय के महत्व को ध्यान में रखते हुए भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा 9 से 13 फरवरी, 2026 के दौरान फाइनेंशियल

लिटरेसी वीक (FLW) 2026 का ग्यारहवाँ संस्करण 'केवाईसी– सुरक्षित बैंकिंग की ओर पहला कदम / KYC– योर फर्स्ट स्टेप टू सेफ बैंकिंग' विषय पर आयोजित किया गया। इस अभियान के अंतर्गत, केवाईसी के महत्व तथा केवाईसी से संबंधित धोखाधड़ी के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता के संबंध में जन-जागरूकता प्रसारित करने हेतु देश भर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।

दस 'डिजिटल-सुरक्षित' आदतें

यद्यपि भारतीय रिज़र्व बैंक तथा सरकार द्वारा जन-जागरूकता बढ़ाने एवं परिचालनात्मक सुरक्षा उपायों को सुदृढ़ करने के लिए अनेक पहल की गई हैं, तथापि डिजिटल एवं साइबर धोखाधड़ी की घटनाएँ निरंतर सामने आती रहती हैं। यह समझना आवश्यक है कि डिजिटल सुरक्षा एक साझा उत्तरदायित्व है। जहाँ एक ओर, प्राधिकरण निरंतर सुरक्षा-तंत्र को सुदृढ़ कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर, धोखेबाज़ भी कमियों का लाभ उठाने हेतु नवीन एवं परिष्कृत तरीकों को अपनाते हुए स्वयं को निरंतर विकसित कर रहे हैं।

ऐसे बदलते माहौल में सुरक्षित रहना काफी हद तक व्यक्तिगत जागरूकता एवं सतर्कता पर निर्भर करता है जिसे मात्र दस आसान 'डिजिटल-सुरक्षित' आदतों का पालन करके सुनिश्चित किया जा सकता है।

पहला, गोपनीय जानकारी जैसे पासवर्ड, पिन, सीवीवी संख्या अथवा ओटीपी किसी भी व्यक्ति के साथ साझा न करें। बैंक का कोई भी अधिकारी, नियामक प्राधिकरण, पुलिस अथवा सेवा प्रदाता कभी भी फोन, संदेश अथवा सोशल मीडिया चैट के माध्यम से ऐसी जानकारी नहीं मांगता। भारतीय रिज़र्व बैंक भी वित्तीय लेन-देन हेतु लोगों से संपर्क नहीं करता, न ही धन की मांग करता है, न लॉटरी जीतने अथवा विदेश से धन प्राप्ति की सूचना देता है। अतः यदि कोई स्वयं को भारतीय रिज़र्व बैंक से सम्बंधित बताते हुए किसी शुल्क या संवेदनशील जानकारी की मांग करता है और खाते में धन जमा करने का आश्वासन देता है, तो वह संभावित रूप से

धोखाधड़ी है।

दूसरा, किसी अनजान लिंक पर क्लिक न करें और किसी अज्ञात ऐप को डाउनलोड न करें, भले ही वे किसी परिचित अथवा निकट संबंधी द्वारा भेजे गए प्रतीत हों। ऐसे लिंक अथवा ऐप आपके डेटा की चोरी कर सकते हैं या आपके फोन पर नियंत्रण स्थापित कर सकते हैं।

तीसरा, जब तक सम्बंधित व्यक्ति की पहचान के प्रति पूर्णतः आश्वस्त न हों, तब तक अपने फोन पर स्क्रीन शेयर करने या दूरस्थ पहुँच (रिमोट एक्सेस) की अनुमति न दें। धोखेबाज़ प्रायः ऐसे ऐप इंस्टॉल करने के लिए कहते हैं, जिनके माध्यम से वे स्क्रीन देख सकते हैं, पासवर्ड अथवा ओटीपी प्राप्त कर सकते हैं या लेनदेन आरंभ कर सकते हैं।

चौथा, केवाईसी अपडेट, खाता बंद होने, रिवार्ड पॉइंट, टैक्स रिफंड, बिजली कटने या पार्सल डिलीवरी से जुड़े संदेशों से सम्बंधित अनुरोधों के प्रति सावधानी बरतें। ये त्वरित कार्रवाई के लिए प्रेरित करने हेतु प्रयुक्त सामान्य बहानों में से हैं।

पाँचवाँ, यह याद रखें कि क्यूआर कोड का उपयोग सामान्यतः भुगतान करने के लिए होता है, न कि धन प्राप्त करने के लिए। यदि कोई व्यक्ति आपसे धन प्राप्त करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करने का अनुरोध करता है, तो पहले सत्यापन अवश्य करें। इस सरल युक्ति के माध्यम से अनेक लोग ठगे जा चुके हैं।

छठा, केवल आधिकारिक वेबसाइटों, भरोसेमंद ऐप और ज्ञात संपर्क नंबर का ही उपयोग करें। यदि किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो, तो संबंधित बैंक अथवा सेवा प्रदाता से उसी नंबर से संपर्क करें, जो उसकी आधिकारिक वेबसाइट या आपके कार्ड के पीछे उपलब्ध हो, न कि किसी अनजान संदेश में दिए गए नंबर पर।

सातवाँ, अपना मोबाइल नंबर, ई–मेल और खाते की जानकारी अपने बैंक में अपडेट रखें। लेन–देन से जुड़े संदेशों को ध्यान से देखें। नोटिफिकेशन चालू रखें और नियमित रूप से अपने खाते के विवरण (स्टेटमेंट) की जाँच करते रहें।

आठवाँ, यदि आपको संदेह हो कि आपके साथ धोखाधड़ी हुई है, तो संकोच या भयवश उसे छिपाने का प्रयास न करें। तत्काल अपने बैंक अथवा भुगतान सेवा प्रदाता को सूचित करें। घटना की सूचना उपयुक्त साइबर क्राइम प्लेटफॉर्म (https://cybercrime.gov.in/, राष्ट्रीय साइबर अपराध हेल्पलाइन संख्या 1930 पर दें तथा यथाशीघ्र शिकायत दर्ज कराएँ। जितनी शीघ्रता से धोखाधड़ी की सूचना दी जाती है, उतनी ही अधिक संभावना होती है कि लेन-देन की श्रृंखला को रोका जा सके अथवा हानि को सीमित किया जा सके। विशेष रूप से, आपकी समयोचित कार्रवाई किसी अन्य व्यक्ति को ऐसे धोखेबाजों का शिकार होने से बचा सकती है।

नौवाँ, मानव की सबसे बड़ी शक्ति उसकी विचार एवं तर्क करने की क्षमता है। तथापि, अनेक बार भावनाएँ इस क्षमता पर प्रभाव डाल देती हैं। ज्ञान इस तर्कशक्ति को सुदृढ़ करता है, भ्रम को दूर करता है तथा स्पष्टता प्रदान करता है। अतः डिजिटल दुनिया में सर्वोत्तम प्रथाओं का ज्ञान प्राप्त करना एवं उन्हें अपनाना आवश्यक है। जब हम जागरूक रहते हैं, तब हम धोखेबाज़ों के प्रयासों को विफल कर सकते हैं।

दसवाँ, आवेग में आकर कोई भी निर्णय न लें। समस्त जानकारी का समुचित विश्लेषण करें तथा विवेकपूर्ण ढंग से कार्य करें। प्रत्येक डिजिटल उपयोगकर्ता को एक सरल नियम का पालन करना चाहिए– आगे बढ़ने से पूर्व ठहरें। यदि कोई कॉल घबराहट उत्पन्न कर रही हो, तो ठहरें। यदि कोई संदेश अत्यधिक तात्कालिक प्रतीत हो, तो ठहरें। यदि कोई प्रस्ताव अत्यधिक आकर्षक लगे, तो ठहरें। यदि कोई निजी जानकारी की मांग करे, तो ठहरें।

निष्कर्ष

डिजिटल युग ने हमारे विकास एवं प्रगति के लिए अनेक नए अवसर प्रदान किए हैं। इसने बैंकिंग, भुगतान तथा वित्तीय सेवाओं को पहले की अपेक्षा अधिक निकट लाकर हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बना दिया है।

प्रौद्योगिकी ने जहाँ व्यापक अवसर एवं सुविधा प्रदान की है, वहीं कुछ जोखिमों को भी जन्म दिया है। सरकार तथा भारतीय रिज़र्व बैंक जैसे सार्वजनिक प्राधिकरण इन धोखाधड़ियों की रोकथाम हेतु आवश्यक कदम उठा रहे हैं। तथापि, जैसा कि पूर्व में उल्लेखित है, यह एक साझा उत्तरदायित्व है। 'डिजिटल-सुरक्षित' दस सरल आदतों का पालन करके हम डिजिटल धोखाधड़ी की समस्या को नियंत्रित करने में संस्थागत प्रयासों को सुदृढ़ समर्थन प्रदान कर सकते हैं।

जैसा कि ब्रूस श्नाइयर ने उपयुक्त रूप से कहा है, "सिक्योरिटी इज़ नॉट अ प्रोडक्ट, बट अ प्रोसेस।" डिजिटल बैंकिंग के संदर्भ में इसका तात्पर्य यह है कि सुरक्षा केवल प्रणालियों के माध्यम से सुनिश्चित नहीं होती, बल्कि निरंतर जागरूकता एवं सतर्क व्यवहार के द्वारा सुनिश्चित की जाती है। प्रत्येक क्लिक, प्रत्येक लेन-देन तथा साझा की गई प्रत्येक जानकारी का महत्व है। आप केवल एक उपयोगकर्ता नहीं हैं, आप अपनी वित्तीय सुरक्षा के प्रथम प्रहरी हैं।

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में देश का मान बढ़ाते

भारतीय मूल के खिलाड़ी

खेल केवल एक प्रतिस्पर्धा नहीं है, यह एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो सीमाओं को पार करते हुए दिलों को जोड़ता है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में कहा कि "जो खेले-वो खिले"। आज के समय में, जब हम टी-20 विश्व कप जैसे बड़े अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट पर नज़र डालते हैं, तो विदेशी टीमों की जर्सी में कई ऐसे चेहरे नजर आते हैं, जो मूल रूप से भारतीय हैं।

अमेरिका, कनाडा, ओमान, यूएई, इटली और न्यूजीलैंड जैसे देशों का प्रतिनिधित्व करते हुए ये खिलाड़ी भारत की बढ़ती 'सॉफ्ट पॉवर' के मज़बूत प्रतीक बन गए हैं। ये खिलाड़ी न केवल अपनी नई कर्मभूमि का गौरव बढ़ा रहे हैं, बल्कि अपनी जड़ों से भावनात्मक और सांस्कृतिक रूप से जुड़े रहकर, विश्वभर के युवाओं के लिए एक प्रेरणा बने हुए हैं।

दिलप्रीत बाजवा

कनाडा की राष्ट्रीय टीम के कप्तान दिलप्रीत बाजवा का जन्म पंजाब के गुरदासपुर में हुआ था। एक आक्रामक बल्लेबाज़ और उपयोगी ऑफ-स्पिनर के तौर पर वे कनाडाई टीम की रीढ़ हैं। टी-20 अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनका शानदार स्ट्राइक रेट उनकी खेल-प्रतिभा को दर्शाता है।

नवनीत धालीवाल

चंडीगढ़ में जन्मे नवनीत धालीवाल कनाडा के शीर्ष क्रम के एक मज़बूत बल्लेबाज़ हैं। उन्होंने कनाडा के लिए 30 से अधिक टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं, जिनमें कई महत्त्वपूर्ण अर्धशतक शामिल हैं।

हर्ष ठाकर

अहमदाबाद में जन्मे हर्ष ठाकर एक बेहतरीन ऑलराउंडर हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी गेंदबाज़ी और बल्लेबाजी से टीम को कई अहम मैच जिताने में बड़ी भूमिका निभाई है।

श्रेयस मोवा

आंध्र प्रदेश के गुंतुरू में जन्मे कनाडा के विकेटकीपर-बल्लेबाज़ श्रेयस मोवा स्टंप्स के पीछे अपनी फुर्ती और निचले क्रम में तेज़ी से रन बनाने के लिए जाने जाते हैं।

मोनांक पटेल

अमेरिकी टीम के कप्तान मोनांक पटेल पहले गुजरात की अंडर-16 और अंडर-18 टीमों के लिए खेल चुके हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वनडे और टी-20 दोनों प्रारूपों में उनके शानदार रिकॉर्ड हैं, जिसमें वनडे में लगाए गए उनके शतक और कई अर्धशतक शामिल हैं।

सौरभ नेत्रावलकर

मुंबई के सौरभ नेत्रावलकर ने भारत के लिए अंडर-19 विश्व कप खेला था और आज वे अमेरिका के प्रमुख तेज़ गेंदबाज़ हैं। वनडे और टी-20 दोनों में बेहतरीन इकोनॉमी रेट और सर्वाधिक विकेट लेने वाले अमेरिकी गेंदबाज़ों की सूची में उनका नाम सबसे ऊपर आता है।

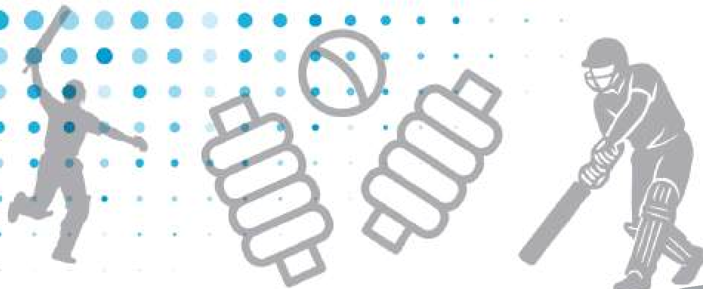

हरमीत सिंह

मुंबई में जन्मे हरमीत सिंह बाएँ हाथ के एक कुशल स्पिनर हैं। भारत के घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन के बाद उन्होंने अमेरिका का रुख किया और अब वहाँ की टीम के मुख्य स्पिनर के रूप में विकेट चटका रहे हैं।

मिलिंद कुमार

दिल्ली में जन्मे इस खिलाड़ी ने भारतीय घरेलू क्रिकेट में रनों का अंबार लगाया था। मिलिंद अब अपने अनुभव और शानदार बल्लेबाज़ी तकनीक के साथ अमेरिकी मध्यक्रम को मज़बूती दे रहे हैं।

जतिंदर सिंह

लुधियाना में पैदा हुए जतिंदर ओमान के सबसे अनुभवी और स्टार बल्लेबाज़ों में से एक हैं। उन्होंने ओमान के लिए 50 से अधिक टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं और 1200 से अधिक रन बनाए हैं। वे ओमान क्रिकेट टीम की कप्तानी भी कर चुके हैं।

विनायक शुक्ला

कानपुर में जन्मे विनायक शुक्ला ओमान की टीम में एक प्रतिभाशाली विकेटकीपर-बल्लेबाज़ हैं, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी बेहतरीन विकेटकीपिंग और आक्रामक बल्लेबाज़ी के लिए जाने जाते हैं।

करन सोनावले

मुंबई में पैदा हुए 31 वर्षीय करन सोनावले शीर्ष क्रम के एक शानदार बल्लेबाज़ और ऑफ-ब्रेक गेंदबाज़ हैं। उन्होंने टी-20 प्रारूप में ओमान के लिए अपनी ख़ास पहचान बनाई है और शानदार स्ट्राइक रेट के साथ रन बटोर रहे हैं।

जय ओडेदरा

पोरबंदर (सौराष्ट्र) के जय ओडेदरा एक प्रभावशाली ऑफ-स्पिनर हैं। उन्होंने ओमान के लिए खेलते हुए वनडे में 20 से अधिक विकेट और टी-20 में शानदार इकोनॉमी के साथ कई अहम विकेट अपने नाम किए हैं।

आशीष ओडेदरा

जूनागढ़ (गुजरात) में जन्मे आशीष ओडेदरा बाएँ हाथ के फिरकी गेंदबाज़ और दाएँ हाथ के बल्लेबाज़ हैं। वर्ष 2024 में ओमान के लिए अंतरराष्ट्रीय डेब्यू करने के बाद से उन्होंने मध्यक्रम में शानदार बल्लेबाज़ी की है, जिसमें उनका एक नाबाद वनडे अर्धशतक भी शामिल है।

शोएब खान

बिहार के गया ज़िले से यूएई की राष्ट्रीय टीम तक पहुँचने वाले शोएब खान ने भारत में रहते हुए जामिया मिल्लिया इस्लामिया से पढ़ाई की और विश्वविद्यालय की क्रिकेट टीम का प्रतिनिधित्व किया। हाल ही में उन्होंने कनाडा के ख़िलाफ खेलते हुए 29 गेंदों में 51 रनों की आक्रामक पारी खेलते हुए टीम की जीत में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

खेलों के ज़रिए भारतीय मूल के खिलाड़ी जिस तरह दुनियाभर में अपना और भारत का नाम रोशन कर रहे हैं, वह हर भारतीय के लिए गर्व का विषय है। ये खिलाड़ी साबित करते हैं कि एक भारतीय चाहे दुनिया के किसी भी कोने में बस जाए, वह अपनी मेहनत और लगन से अपनी अलग पहचान बना ही लेता है और अपनी मातृभूमि से हमेशा जुड़ा रहता है।

साभारः सभी खिलाड़ियों की तस्वीरें उनके सोशल मीडिया हैंडल से ली गई हैं।

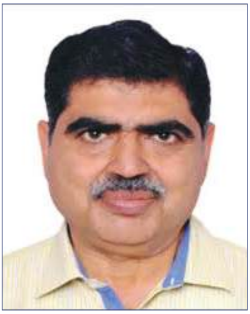

डॉ. अनिल कुमार
निदेशक
राष्ट्रीय अंग एवं ऊतक
प्रत्यारोपण संगठन
(NOTTO)

भारत में अंगदान

नीति, जनविश्वास और सामूहिक उत्तरदायित्त्व

भारत में अंगदान उन सबसे महान और करुणामय कार्यों में से एक है जो मानव कर सकता है। यह कार्य किसी की व्यक्तिगत क्षति को नए जीवन और आशा में बदल देता है। यह केवल एक चिकित्सीय प्रक्रिया नहीं है; यह एक साझा सामाजिक ज़िम्मेदारी और एक राष्ट्र के रूप में हमारी सामूहिक चेतना का प्रतिबिम्ब भी है। अंग प्रत्यारोपण दर्शाता है कि किस प्रकार चिकित्सा विज्ञान, उत्तरदायी सार्वजनिक नीति और नागरिकों की भागीदारी मिलकर किसी का जीवन बचा सकते हैं। पिछले एक दशक में भारत ने जवाबदेही, प्रौद्योगिकी और बढ़ते जनविश्वास पर आधारित एक पारदर्शी तथा राष्ट्रीय स्तर पर समन्वित प्रत्यारोपण तंत्र धीरे-धीरे विकसित किया है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में अंगदान के महत्त्व पर निरन्तर बल देते रहे हैं जिससे पूरे देश में इस अभियान को महत्त्वपूर्ण गति और प्रोत्साहन मिला है।

इस दिशा में हुई प्रगति स्पष्ट दिखाई देती है। भारत में अंग प्रत्यारोपण की संख्या चार गुना बढ़ गई है– 2013 में जो संख्या 5,000 से कम थी वह बढ़कर 2025 में 20,000 से अधिक हो गई। मृतदाताओं से होने वाले अंग प्रत्यारोपण की संख्या भी 2013 में 837 से बढ़कर 2025 में लगभग 3,475 हो गई। इस अवधि के दौरान राष्ट्रीय अंगदान दर में भी चार गुना वृद्धि हुई है। ये उपलब्धियाँ निरन्तर नीतिगत सुधार, सुदृढ़ शासन तंत्र और देशभर के स्वास्थ्यकर्मियों के समर्पण का परिणाम हैं।

नीति, जागरूकता और जन भागीदारी

भारत का प्रत्यारोपण तंत्र मानव अंग एवं ऊतक प्रत्यारोपण अधिनियम (THOTA) 1994 पर आधारित है, जिसके तहत ब्रेन-स्टेम मृत्यु को मान्यता मिलती है, दुरुपयोग के विरुद्ध सुरक्षा उपाय निर्धारित होते हैं और अंगों का पारदर्शी तथा न्यायसंगत विनियोजन अनिवार्य है।

अंगदान का मूल आधार मानवीय करुणा है। ब्रेन-स्टेम मृत्यु के बाद एक मृतदाता के गुर्दे, यकृत (लिवर),

हृदय, फेफड़े, अग्न्याशय (पैंक्रियाज़) और आँत जैसे अंगदान से अधिकतम आठ लोगों का जीवन बच सकता है। इसके अतिरिक्त, कॉर्निया, त्वचा, हड्डियाँ और हाथ जैसे टिशूज़ का दान भी अनेक लोगों के जीवन में परिवर्तन ला सकता है। टिशूज़ का दान, परिसंचरण (सर्कुलेटरी) मृत्यु तथा प्राकृतिक मृत्यु के बाद भी किया जा सकता है।

जनभागीदारी में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। सितम्बर 2023 से अब तक आधार–सत्यापित डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से 4.8 लाख से अधिक नागरिकों ने अंगदान का संकल्प लिया है। केवल 2025 में ही 1,200 से अधिक परिवारों ने ब्रेन–स्टेम मृत्यु के प्रमाणन के बाद बहु–अंगदान के लिए सहमति दी जिससे पूरे देश में जीवनरक्षक अंग प्रत्यारोपण सम्भव हो सके। ये आँकड़े बढ़ती जागरूकता और विश्वास दर्शाते हैं, हालाँकि अंगों की माँग अब भी इनकी उपलब्धता से अधिक है।

समान वित्तीय सुलभता

भारत सरकार राष्ट्रीय अंग प्रत्यारोपण कार्यक्रम (NOTP) लागू कर रही है जिसका उद्देश्य मृतक के अंगदान को बढ़ावा और प्रत्यारोपण सेवाएँ सुदृढ़ करके, देश के ज़रूरतमन्द नागरिकों को जीवन बदल देने वाला प्रत्यारोपण सुलभ कराना है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सार्वजनिक क्षेत्र में प्रत्यारोपण और अंग प्राप्ति केन्द्रों की स्थापना एवं उन्नयन के लिए वित्तीय सहायता दी जाती है। साथ ही प्रशिक्षित प्रत्यारोपण समन्वयकों की नियुक्ति, मृत–दाताओं का संरक्षण, अंग लाने ले जाने की सुविधा, प्रत्यारोपण के बाद आवश्यक इम्यूनोसप्रेसिव दवाओं की उपलब्धता तथा मृतदाताओं के लिए सम्मानजनक अन्तिम संस्कार में सहायता भी दी जाती है। इन उपायों से छोटे शहरों और उभरते चिकित्सा केन्द्रों के अस्पताल, राष्ट्रीय प्रत्यारोपण तंत्र में प्रभावी रूप से भाग लेने में सक्षम होते हैं।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत राष्ट्रीय (NOTTO), क्षेत्रीय (ROTTO) और

राज्य (SOTTO) स्तर पर अंग एवं ऊतक प्रत्यारोपण संगठन बनाए गए हैं। ये संगठन, अंग प्रत्यारोपण या अंग प्राप्त करने वाले 950 से अधिक अस्पतालों से सम्पर्क करके अंगों की प्राप्ति और वितरण की एक कुशल प्रणाली सुनिश्चित करते हैं।

सार्वजनिक स्वास्थ्य सुरक्षा सम्बन्धी कई योजनाएँ वित्तीय बाधाएँ और कम करती हैं। आयुष्मान भारत – प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (PMJAY) में गुर्दा प्रत्यारोपण शामिल है; राष्ट्रीय आरोग्य निधि (RAN) प्रमुख अंग प्रत्यारोपण में मदद देती है; प्रधानमंत्री राष्ट्रीय डायलिसिस कार्यक्रम (PMNDP) ज़िला स्तर की स्वास्थ्य सुविधाओं में निःशुल्क डायलिसिस सेवाएँ उपलब्ध कराता है; और प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना (PMBJP) गुणवत्तापूर्ण दवाएँ, जिनमें अंग प्रत्यारोपण के बाद आवश्यक इम्यूनोसप्रेसिव दवाएँ भी शामिल हैं, सस्ती कीमत पर उपलब्ध कराती है। ये सभी मिलकर प्रत्यारोपण की लागत और दीर्घकालिक उपचार की आवश्यकताएँ पूरी करने में सहायक होती हैं।

डिजिटल एकीकरण

डिजिटल एकीकरण ने पारदर्शिता और दक्षता अधिक सुदृढ़ की है। ऑनलाइन पंजीकरण और बेहतर डेटा प्रबन्धन से ट्रेसेबिलिटी बढ़ी है, देरी कम हुई है और नागरिक जानकारी के आधार पर निर्णय लेने में सक्षम हुए हैं। इस प्रकार प्रौद्योगिकी, शासन का एक प्रभावी उपकरण होने के साथ-साथ नीति और जनभागीदारी के बीच सेतु का काम भी कर रही है। नागरिकों को अपने परिवार के सदस्यों के साथ अपनी इच्छा पर चर्चा करने और अंगदाता के रूप में पंजीकरण कराने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। वे NOTTO पोर्टल www.notto.abdm.gov.in पर या 24×7 राष्ट्रीय हेल्पलाइन 1800-11-4770 के माध्यम से पंजीकरण कर सकते हैं।

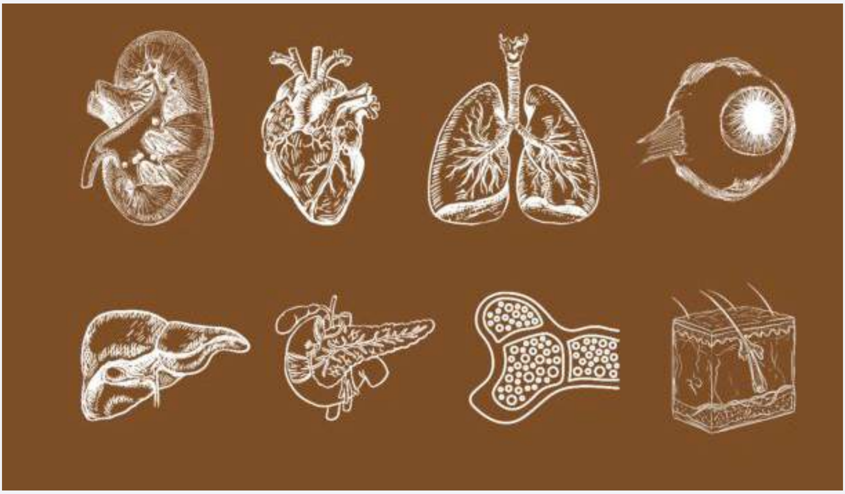

चुनौतियाँ और आगे की राह

प्रगति होने के बावजूद कुछ चुनौतियाँ अभी बनी हुई हैं। भारत में अंग प्रत्यारोपण का एक बड़ा हिस्सा अब भी जीवित दाताओं पर निर्भर है जो दर्शाता है कि मृतक के अंगदान सम्बन्धी प्रणाली को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। सार्वजनिक क्षेत्र में प्रत्यारोपण सुविधाओं की सीमित उपलब्धता भी वहनीयता और समान पहुँच को प्रभावित कर सकती है। इसके अतिरिक्त, कई ग्रामीण और अर्ध–शहरी अस्पतालों में समय पर ब्रेन–स्टेम मृत्यु की पहचान और दाता के संरक्षण के लिए आवश्यक उन्नत क्रिटिकल केयर सुविधाओं का अभाव है।

सरकारी अस्पतालों, विशेषकर कम सुविधा प्राप्त ज़िलों में, प्रत्यारोपण और अंग प्राप्ति सुविधाओं का विस्तार करने के प्रयास जारी हैं। साथ ही, आईसीयू चिकित्सकों, ट्रान्सप्लांट समन्वयकों और शोक परामर्शदाताओं का प्रशिक्षण सुदृढ़ किया जा रहा है ताकि सम्भावित दाताओं की पहचान और सहमति दर बेहतर हो सके। भ्रम दूर करने और स्वैच्छिक अंगदान प्रोत्साहित करने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म तथा सामुदायिक पहुँच कार्यक्रमों के माध्यम से जागरूकता अभियानों में भी और गति लाई जा रही है।

अंगदान - मेरा अधिकार

अंगदान देश के प्रत्येक नागरिक का अधिकार है और सरकार आवश्यक व्यवस्थाएँ स्थापित करने को प्रतिबद्ध है ताकि हर व्यक्ति या परिवार अंगदान के लिए हाँ या ना कहने का निर्णय स्वतंत्र, स्वैच्छिक और पूर्ण जानकारी के आधार पर ले सके।

नागरिकों से निवेदन

अंगदान 'महादान' माना गया है जो उदारता का सर्वोच्च कार्य है। यह भारत की करुणा और दान की दीर्घकालीन परम्परा दर्शाता है। अंगदान के बारे में की गई हर चर्चा, किसी का जीवन बचा सकती है। आइए, हम सभी मिलकर जीवन बचाने के इस महान उद्देश्य को बढ़ावा देने के राष्ट्रीय प्रयास में योगदान करें।

जीवनदाता बनें – अंगदान का प्रचार करें।

जय हिन्द!

जीवन का उपहार
अंगदान की प्रेरक कहानियाँ

अंगदान करने का फैसला आमतौर पर मनुष्य के जीवन के सबसे कठिन क्षणों में लिया जाता है जब दुख और नुकसान की कसौटी पर परिवारों की ताकत आँकी जाती है। फिर, ऐसे ही क्षणों में दया और सहानुभूति के असाधारण भाव उभरकर सामने आते हैं। समूचे देश में अंगदान की कहानियाँ लगातार दर्शाती रहती हैं कि करुणा और सहृदयता का एक ही कार्य किस प्रकार जीवन की घोर निराशा को आशा के उजाले में बदल सकता है। केरल में नन्हीं आलिन शेरिन अब्राहम के परिवार के साहसिक निर्णय से लेकर अंग प्रत्यारोपण का लाभ प्राप्त करने वाली दिल्ली की लक्ष्मी देवी, पश्चिम बंगाल के गौरांग बैनर्जी और राजस्थान के रामदेव सिंह तक सभी में जीवन का नवसंचार करने से जुड़ी सभी यात्राएँ साहस, सहानुभूति और दान करने की गहन भावना को परिलक्षित करती हैं।

आलिन शेरिन अब्राहम

"यह बेहद इत्तेफाक और दुर्भाग्य के कारण ही हुआ था। हमारी बच्ची के साथ अचानक दुर्घटना हुई और गंभीर चोटें लगने से मात्र 10 महीने की नन्हीं आयु में ही वह हमें छोड़कर हमेशा के लिए चली गई। अपने पुत्र और बहु के बीच हुई लम्बी चर्चा के बाद हम उस बच्ची के आंतरिक अंगदान करने का फैसला ले पाए थे। अंगदान करने का असली मकसद यही था कि कुछ लोगों की जान बचाई जा सके। हमारे फैसले से चार लोगों को जीवनदान मिल गया और एक व्यक्ति को दृष्टि मिल गई जिससे वह देख पाने लायक बन गया। हम तो इसे ईश्वरीय प्रेरणा ही मानते हैं।"

-रेजी सैमुअल, केरल की मात्र दस माह की नन्हीं अंगदात्री आलिन शेरिन अब्राहम के दादा

"मेरा हृदय सिर्फ 15 प्रतिशत ही काम करता था पर अब मैं एकदम फिट हूँ और मेरा दिल पूरी तरह काम करने लगा है। हृदय प्रत्यारोपण के बाद मैंने नीलकंठ, केदारनाथ, प्रयागराज, वैष्णोदेवी और खाटू श्याम की यात्राएँ की हैं। अब मैं दो साल से कैब चला रही हूँ। मेरी तीन बेटियाँ हैं और मेरी इच्छा है कि वे देश सेवा और रोगियों व गरीबों की सेवा में अपना जीवन लगाएँ। अंग न मिल पाने के कारण अनेक लोगों को जान गँवानी पड़ती है। मैं उस बच्ची के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिसने अपना हृदय मुझे दान करके मेरी जान बचाई। लोगों को अंगदान करना चाहिए। यदि मेरे शरीर से किसी को नया जीवन मिल सकता है तो मैं भी अंगदान कर दूँगी।"

-लक्ष्मी देवी, हृदय प्रत्यारोपण से नया जीवन पाने वाली लाभार्थी, दिल्ली

अंग

"मेरे फेफड़ों के प्रत्यारोपण की यात्रा को 'मन की बात' कार्यक्रम के ज़रिए लोगों तक पहुँचाने पर मैं माननीय प्रधानमंत्री का सच्चे हृदय से आभारी हूँ। 22 जनवरी, 2019 को मेरे दोनों फेफड़े प्रत्यारोपित किए गए थे। यह सब उस साहसिक परिवार के दयाभाव के कारण सम्भव हो सका जिन्होंने अपनी नन्हीं परी के अंगदान करके मुझे नया जीवन दिया और साथ ही मेरे भीतर अपनी उस नन्ही-मुन्नी की स्मृति भी जीवित रखी है। प्रत्यारोपण से पहले के एक वर्ष में तो मैं पूरी तरह ऑक्सीजन सपोर्ट पर निर्भर था। ऑक्सीजन के बिना मैं ज़रा भी नहीं चल पाता था, यहाँ तक कि वॉशरूम में भी मुझे ऑक्सीजन लगाने की ज़रूरत पड़ती थी। आज जो मैं सामान्य जीवन जी पा रहा हूँ, उसके लिए मैं अंगदान करने वाले परिवार, डॉक्टरों और उनके सहयोगियों, अपने परिवारजनों तथा सभी शुभचिंतकों के प्रति सदैव आभारी रहूँगा। ईश्वर की कृपा से अब मैं नाथू ला जैसे स्थानों पर भी हो आया हूँ। आप सभी से मेरी विनम्र प्रार्थना है- "कृपया अंगदान के लिए आगे आएँ तथा अन्य लोगों को भी इसके प्रति जागरूक बनाएँ। किसी में नवजीवन का संचार करने से बड़ा कोई और उपहार नहीं हो सकता।"

-गौरांग बैनर्जी, फेफड़े प्रत्यारोपण के लाभार्थी, पश्चिम बंगाल

दान

"मेरे दोनों गुर्दे खराब हो चुके थे। मैं जीवन से पूरी तरह निराश हो चुका था। डॉक्टरों ने प्रत्यारोपण का विकल्प सुझाया था। मेरे माता-पिता मुझे अपने गुर्दे दान करने को राज़ी थे पर मैं इससे जुड़े जोखिम से डर रहा था। उधर, डॉक्टरों की राय थी कि गुर्दा दान करने वाला और गुर्दा लगवाने वाला, दोनों ही, प्रत्यारोपण के बाद सामान्य जीवन जी सकते हैं। प्रत्यारोपण 2012 में हुआ था। मेरी माता ने मुझे अपना गुर्दा दान किया था जिससे मेरा जीवन फिर से सामान्य हो गया। 'ट्रांसप्लांट गेम्स' के लिए प्रैक्टिस करने में **ऑर्गन इंडिया** ने मेरी मदद की और हम 2025 में जर्मनी गए थे जहाँ हमने कई पदक जीते। भारत इन खेलों में 13वें स्थान पर रहा था। मुझे पूरी उम्मीद है कि अगली बार हम पहला स्थान प्राप्त करेंगे।

-रामदेव सिंह, गुर्दा प्रत्यारोपण के लाभार्थी, सीकर, राजस्थान

अंगदान करना किसी भी चिकित्सा प्रक्रिया से अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह वास्तव में सहानुभूति और मानवीय सद्भाव की अभिव्यक्ति है। अंगदान करने वाले हर परिवार और प्रत्यारोपण से अंग प्राप्त करने वाले लाभार्थी के परिवार के साहस, संघर्ष क्षमता और कृतज्ञता की अपनी अलग कहानी होती है जो साबित करती है कि संकटकाल में भी आशा का संचार हो सकता है।

राजाजी उत्सव

सी. राजगोपालाचारी का स्मरण

आज भारत तेज़ी से अपनी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय धरोहरों को सहेजने तथा उन्हें सर्वोच्च सम्मान देने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी लाल क़िले से 'पंच प्रणों' की घोषणा की, जिनमें से एक प्रमुख 'ग़ुलामी की मानसिकता से मुक्ति' है। इसी कड़ी में महान स्वतंत्रता सेनानी सी. राजगोपालाचारी के ऐतिहासिक योगदान को चिरस्थायी बनाने के लिए 'राजाजी उत्सव' के रूप में एक बड़ा क़दम उठाया गया है।

ग़ुलामी के प्रतीकों से मुक्ति का संकल्पः आज़ादी के दशकों बाद भी हमारे देश के सर्वोच्च संस्थानों में ब्रिटिश प्रशासकों के प्रतीक मौजूद थे। अब भारत एक नई चेतना के साथ इन औपनिवेशिक प्रतीकों को हटाकर अपने देश के महान सपूतों और वास्तविक नायकों को उनका उचित स्थान दे रहा है।

राष्ट्रपति भवन में 'राजाजी उत्सव' का आयोजनः भारत की बदलती सोच और राष्ट्रीय धरोहर के प्रति सम्मान को प्रदर्शित करते हुए, 23 फरवरी को देश के सबसे प्रतिष्ठित स्थान राष्ट्रपति भवन में ऐतिहासिक 'राजाजी उत्सव' का आयोजन किया गया।

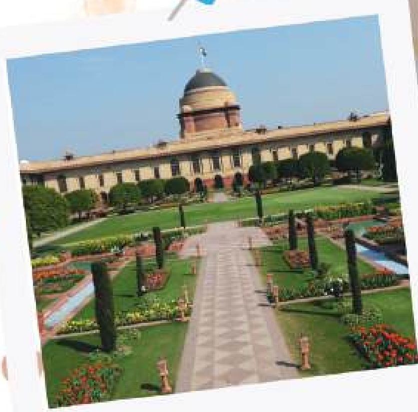

सी. राजगोपालाचारी जी की प्रतिमा का अनावरणः इस भव्य उत्सव के अवसर पर राष्ट्रपति भवन के केन्द्रीय प्रांगण में देश के महान सपूत सी. राजगोपालाचारी जी (जिन्हें प्यार से राजाजी कहा जाता है) की प्रतिमा का अनावरण किया गया।

प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल का ऐतिहासिक गौरवः सी. राजगोपालाचारी जी स्वतंत्र भारत के पहले भारतीय गवर्नर जनरल थे, जिन्होंने देश के लोकतांत्रिक और प्रशासनिक ढाँचे को मज़बूत किया।

सत्ता नहीं, बल्कि निस्वार्थ सेवा का भावः राजाजी उन विरल और महान नेताओं में से एक थे जिन्होंने सत्ता को कभी पद के लालच की तरह नहीं देखा। उनके लिए यह हमेशा राष्ट्र और जनता की निस्वार्थ सेवा का एक पवित्र माध्यम रहा।

प्रेरणादायी आचरण और स्वतंत्र चिंतनः सार्वजनिक जीवन में सी. राजगोपालाचारी जी का निर्मल आचरण, उनका असीम आत्मसंयम और उनका स्वतंत्र चिंतन अद्भुत था। उनके उच्च जीवन मूल्य आज के समय में भी देशवासियों और विशेषकर युवाओं को गहराई से प्रेरित करते हैं।

राजाजी के जीवन पर आधारित विशेष प्रदर्शनीः राजाजी उत्सव के अंतर्गत केवल प्रतिमा का अनावरण ही नहीं हुआ, बल्कि 24 फरवरी से 1 मार्च तक उनके जीवन, संघर्षों और राष्ट्र-निर्माण में उनके अतुलनीय योगदान पर आधारित एक विशेष प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया ताकि आम जनता अपनी इस महान धरोहर से जुड़ सके।

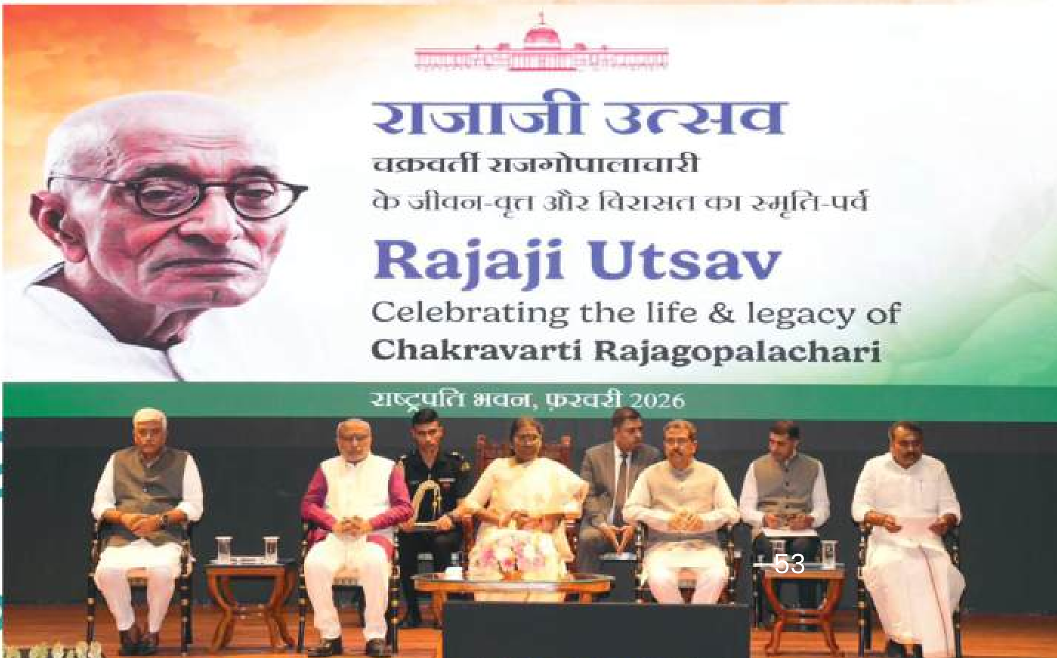

नवाचार से वैश्विक निर्यात की ओर

मज़बूत होता भारतीय कृषि क्षेत्र

भारत में कृषि केवल एक आजीविका नहीं है, यह हमारी संस्कृति और जीवन का आधार है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में कहा है कि हमारे किसान केवल 'अन्नदाता' नहीं हैं, बल्कि वे 'धरती के सच्चे साधक' हैं। आज का भारतीय किसान अपनी सदियों पुरानी परम्परा और आधुनिक तकनीक का शानदार तालमेल बिठा रहा है। अब हमारे किसानों का ध्यान केवल उत्पादन बढ़ाने पर नहीं है, बल्कि गुणवत्ता, वैल्यू एडिशन और दुनियाभर के नए बाज़ारों तक पहुँचने पर भी है।

भारतीय कृषि में आ रहे इस सुखद और क्रांतिकारी बदलाव को हम कुछ बेहद प्रेरक उदाहरणों के ज़रिए समझ सकते हैं।

एकीकृत खेती का कमालः युवा किसान हिरोद पटेल की कहानी

ओडिशा के सुंदरगढ़ ज़िले के रतनपुर गाँव के एक युवा किसान हिरोद पटेल ने खेती को एक नए और व्यावसायिक नज़रिए से देखना शुरू किया है। एक समय था जब वे पारम्परिक ढंग से केवल धान की खेती करते थे और उन्हें टमाटर की फसल में लगातार नुक़सान भी उठाना

पड़ा था। लेकिन अपनी मेहनत और नवाचार से उन्होंने 'इंटीग्रेटेड फार्मिंग' का जो मॉडल खड़ा किया, वह आज देशभर के किसानों के लिए मिसाल बन गया है। हिरोद पटेल अपनी इस यात्रा के बारे में बताते हैंः

"पहले मेरे माता-पिता एक एकड़ में इंटरक्रॉपिंग (intercropping) करते थे। जगह की कमी की वजह से वे सब्ज़ियाँ उगाते थे। उन्हीं को देखकर मुझे प्रोत्साहन मिला। वर्ष 2018 में मुझे हॉर्टिकल्चर विभाग की तरफ से जलगाँव (महाराष्ट्र) जाने का अवसर मिला। वहाँ केले की खेती देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा... इसे देखकर मैंने भी ट्रायल किया तो अच्छा मुनाफ़ा हुआ।"

अपने मुनाफ़े को और बढ़ाने के लिए हिरोद ने वर्ष 2020 में दो तालाब खुदवाए और उनमें मछली पालन शुरू किया। तालाब की मेड़ पर अमरूद, पपीते और बेर के पेड़ लगाए। सबसे बड़ा नवाचार उन्होंने तब किया जब तालाब के ऊपर एक मज़बूत जालीदार लोहे का ढाँचा

तैयार करवाया और उस पर बेल वाली सब्ज़ियाँ उगाईं यानी एक ही जगह पर फल, सब्ज़ी और मछली का उत्पादन होने लगा। इससे न केवल ज़मीन का बेहतर उपयोग हुआ, बल्कि पानी की बचत भी हुई। हिरोद कहते हैंः

"हमारे हॉर्टिकल्चर विभाग में ट्रेनिंग के लिए आने वाले किसान मेरे यहाँ भी

आते हैं, इसे देखते हैं और कुछ लोगों ने इस मॉडल को अपनाने की भी कोशिश की है।"

बीजों की अनमोल विरासतः एक खेत में धान की 570 क़िस्में

यह नवाचार केवल मुनाफ़े तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी जड़ों और बीजों की विरासत को बचाने का भी एक महा अभियान बन चुका है। केरल के त्रिशूर ज़िले में एक ऐसा गाँव है जहाँ 'सर्वदोदरम ऑर्गेनिक्स' (Sarvadodaram Organics) के माध्यम से किसान एक ही खेत में धान की 570 से अधिक क़िस्में उगा रहे हैं। इनमें स्थानीय, हर्बल और अन्य राज्यों व देशों से लाई गई क़िस्में शामिल हैं।

इस महा अभियान का नेतृत्व कर रहे 'सर्वदोदरम ऑर्गेनिक्स' के अध्यक्ष ऋषिकेश अपनी इस पहल के बारे में कहते हैंः

"हमने अपनी व्यक्तिगत रुचि के चलते बीजों को इकट्ठा करना शुरू किया था। शुरुआत में हमारे पास 124 क़िस्में थीं। कृषि के क्षेत्र में जुड़े लोगों के सहयोग से हमने धीरे-धीरे पूरे भारत और यहाँ तक कि विदेशों से भी बीज एकत्र किए और अब हम 570 क़िस्मों तक पहुँच गए हैं। हम इन बीजों को सिर्फ अपने तक सीमित नहीं रखते, बल्कि दूसरे किसानों को भी उगाने और बीजों के आदान-प्रदान के लिए देते हैं।"

इतनी विविधताओं को एक साथ 80-85 एकड़ की जैविक खेती में संभालना आसान नहीं है। ऋषिकेश बताते हैं:

"विभिन्न जलवायु वाले बीजों को एक साथ उगाना एक बड़ी चुनौती है। जलवायु, पानी और खनिजों की ज़रूरत हर बीज के लिए अलग होती है। कृषि विशेषज्ञों ने हमें सही समय पर बीजों के अंकुरण के आइडियाज़ दिए। हमारी रुचि और जुनून के कारण और ईश्वर की कृपा से हम इसे सफलतापूर्वक कर पा रहे हैं।"

किसानों की इस अथक मेहनत का परिणाम है कि आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा चावल उत्पादक देश बन चुका है। आज देश में 15 करोड़ टन से अधिक चावल का उत्पादन हो रहा है। आज भारत न केवल अपनी 140 करोड़ की आबादी की ज़रूरतें पूरी कर रहा है, बल्कि दुनिया की 'फूड बास्केट' में भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

जीआई टैग और बुलंदियों को छूता निर्यात

भारत की कृषि ताक़त अब केवल मात्रा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसकी गुणवत्ता भी वैश्विक मंच पर छा रही है। आज हमारे किसानों के उत्पाद हवाई मार्ग से आसानी से विदेशों तक पहुँच रहे हैं।

हाल ही में, कर्नाटक के प्रसिद्ध 'नंजनगुड केले', 'मैसूरु पान के पत्ते' और 'इंडी नींबू' को हवाई मार्ग से मालदीव भेजा गया है। ये उत्पाद अपने ख़ास स्वाद और बेजोड़ गुणवत्ता के लिए जाने जाते हैं, जिसके कारण इन्हें 'जीआई टैग' का सम्मान भी मिला हुआ है।

आज का भारतीय किसान बदल रहा है। वह तकनीक का इस्तेमाल कर रहा है, बीजों की विरासत को सहेज रहा है और जीआई टैग के ज़रिए वैश्विक बाज़ार में अपनी जगह बना रहा है। नवाचार से लेकर वैश्विक निर्यात तक की यह यात्रा इस बात का प्रमाण है कि भारत की कृषि में अब एक नई और आधुनिक ऊर्जा का संचार हो चुका है।

केरल कुम्भ

दक्षिण में बहती आस्था की धारा

> चाहे महाकुम्भ हो या केरल कुम्भ, यह सिर्फ़ नहाने का त्योहार नहीं है। यह पुरानी यादों को ताज़ा करने वाला है। यह संस्कृति को फिर से याद करने जैसा है। उत्तर से दक्षिण तक, नदियाँ अलग हो सकती हैं, किनारे अलग हो सकते हैं, लेकिन आस्था की धारा एक ही है—यह भारत है।
>
> **-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी,**
> **'मन की बात' सम्बोधन में**

केरल के मलप्पुरम जिले में तिरुनावया स्थित भरतपुझा नदी के पवित्र तटों पर, एक सदियों पुरानी आध्यात्मिक परम्परा, जिसे 'महा माघ महोत्सव' (और अक्सर 'केरल कुम्भ' भी कहा जाता है) का आयोजन पूरे 17 दिनों - 18 जनवरी से 3 फरवरी, 2026 तक किया गया। माघ के पवित्र महीने से जुड़ा यह उत्सव श्रद्धालुओं को एक साथ ले आया; ये श्रद्धालु पवित्र स्नान (माघ स्नान), प्रार्थना और आध्यात्मिक अनुष्ठानों के लिए नदी के तटों पर एकत्रित हुए। यह ऐतिहासिक समागम लगभग ढाई शताब्दियों तक काफी हद तक लुप्त हो गया था, लेकिन इसका पुनरुद्धार भारत के अपनी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत से पुनः जुड़ने के नए प्रयासों को दर्शाता है। यह आयोजन उसी भक्ति-धारा की गूंज है जो देश के महान नदी-उत्सवों, उत्तर के 'महा कुम्भ' से लेकर दक्षिण के 'केरल कुम्भ' तक में प्रवाहित होती है।

केरल कुम्भ

परीक्षा पे चर्चा

2026

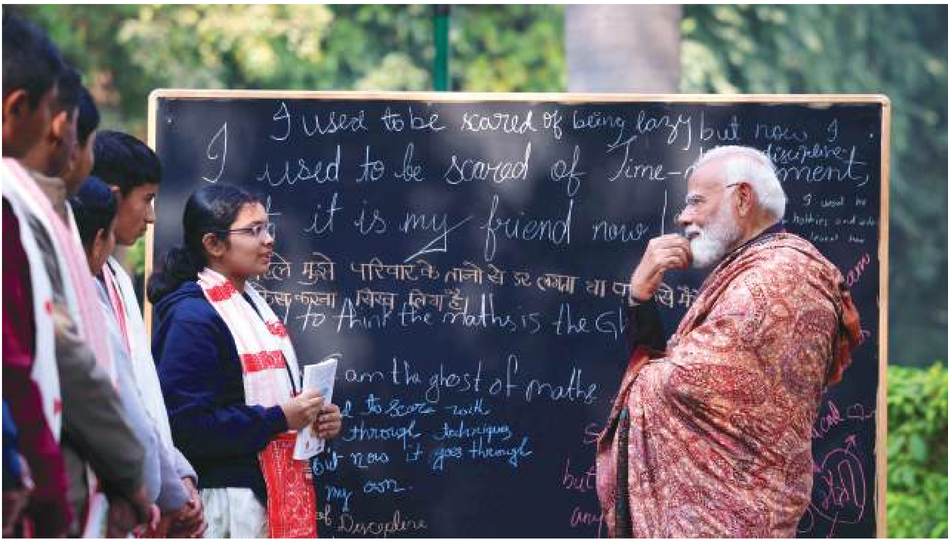

माननीय प्रधानमंत्री की अगुवाई में हर वर्ष होने वाली 'परीक्षा पे चर्चा' से लाखों विद्यार्थियों के मन उत्साह और हर्ष से भर जाते हैं। इस कार्यक्रम के 9वें संस्करण के लिए इस वर्ष विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों की ओर से पंजीकरण के लिए साढ़े चार करोड़ से ज़्यादा आवेदन मिले हैं। साथ ही, 2 करोड़ 26 लाख ऐसे प्रतिभागी भी शामिल हुए हैं जो अन्य संबद्ध गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। इस तरह, कुल मिलाकर इस बार की 'परीक्षा पे चर्चा' में 6 करोड़ 76 लाख से ज़्यादा लोग भाग ले रहे हैं जो अब 'जन आंदोलन' का रूप ले चुका है। पंजीकृत लोगों की संख्या पिछले वर्ष की 'परीक्षा पे चर्चा-2025' में हुए 3 करोड़ 53 लाख पंजीकरणों की संख्या को पार कर चुकी है जबकि 2025 में ही यह संख्या गिनीज़ विश्व रिकॉर्ड बना चुकी है।

शिक्षा मंत्रालय के स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग की ओर से आयोजित की जाने वाली 'परीक्षा पे चर्चा' का उद्देश्य विद्यार्थियों के मन से परीक्षा के कारण होने वाले तनाव को कम करना, कठिन परिस्थिति से उबरने की क्षमता विकसित करना, उनका समग्र विकास करना तथा सीखने के लिए उनमें संतुलित सोच पैदा करना है। इस पहल के

माध्यम से विद्यार्थियों को जुझारू बनाना है न कि बेकार की फिक्र करने वाला। परीक्षा को बोझ न समझ कर इसे विकास और आत्मबल को पहचानने का अवसर मानकर, उत्सव की तरह लिया जाए।

'परीक्षा पे चर्चा' के हाल के संस्करण में माननीय प्रधानमंत्री ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए आग्रह किया कि वे अन्य विद्यार्थियों से तुलना करने के बजाय अध्ययन की अपनी शैली अपनाएँ क्योंकि हरेक विद्यार्थी की तैयारी का तरीका और सीखने की गति अलग होती है। चर्चा में सार्थक लक्ष्य तय करने, कम्फर्ट ज़ोन (सुविधाजनक दिनचर्या) को छोड़कर धीरे-धीरे ठोस कदम बढ़ाएँ तथा लगातार सुधार के प्रयास जारी रखते हुए अपनी क्षमता में विश्वास को मज़बूत करें। विद्यार्थियों को पढ़ाई में टेक्नोलॉजी और एआई जैसे नए उपकरणों का सूझबूझ के

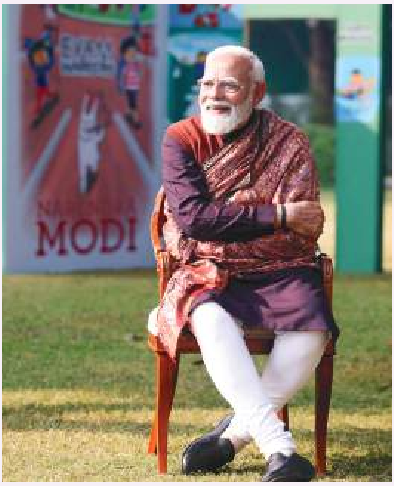

साथ इस्तेमाल करने की सलाह भी दी गई ताकि वे परीक्षा के प्रति सकारात्मक सोच रखते हुए अपना विश्वास मज़बूत बनाए रखें।

'परीक्षा पे चर्चा-2026' में पहली बार कई स्थानों से चर्चा आयोजित करने की नई पहल शुरू की गई है, तथा अब यह चर्चा नई दिल्ली के एकमात्र स्थान में केंद्रित न

रहकर अन्य स्थानों से भी आयोजित की जाने लगी है। इस नई पहल से देश के विभिन्न क्षेत्रों के विद्यार्थीगण शिक्षा और परीक्षा पर राष्ट्रीय चर्चा में सीधे ही अधिक उत्साह के साथ भाग ले सकते हैं।

मुख्य चर्चा तो नई दिल्ली से ही की गई थी लेकिन देशभर के चार अन्य स्थानों से भी विशेष चर्चाएँ कराई गईं :

- देव मोगरा, गुजरात
- कोयंबटूर, तमिलनाडु
- रायपुर, छत्तीसगढ़
- गुवाहाटी, असम

ये स्थान देश के पश्चिमी, दक्षिणी, मध्य और पूर्वोत्तर क्षेत्रों से चुने गए हैं ताकि देश के विभिन्न भागों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके।

शिक्षा मंत्रालय ने 'परीक्षा पे चर्चा–2026' की तैयारी के सिलसिले में राष्ट्रव्यापी विद्यार्थी–केंद्रित गतिविधियों की शृंखला आयोजित की जिससे परीक्षा को लेकर सकारात्मक और प्रेरक वातावरण बनाया जा सके। ये गतिविधियाँ 12 जनवरी (राष्ट्रीय युवा दिवस) से 23 जनवरी (पराक्रम दिवस) तक चलाई गईं ताकि कार्यक्रम को अहम राष्ट्रीय अवसरों से जोड़कर युवाओं में विश्वास, अनुशासन और साहस के भाव विकसित करने में सफलता मिल सके। कार्यक्रम की शुरुआत 'स्वदेशी संकल्प दौड़' से हुई जिसमें देशभर के स्कूलों में विद्यार्थियों की दौड़ कराई गईं। क्विज़ प्रतियोगिताएँ, लेखन प्रतियोगिताएँ और चर्चाएँ भी आयोजित की गईं। इन विभिन्न गतिविधियों में लगभग 2 करोड़ 26 लाख विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इससे पता चलता है कि इस कार्यक्रम के तहत कितनी बड़ी संख्या में प्रतिभागी शामिल हुए और तभी तो 'परीक्षा की चर्चा' ने राष्ट्रव्यापी जन–आंदोलन का रूप ले लिया।

"उनकी सलाह सुनने के बाद मुझे लगा कि मुझे अपने आदर्शों के बारे में पूरी जानकारी एकत्र करके देखना चाहिए कि ये आदर्श किस आधार पर टिके थे और कौन-कौन सी चुनौतियाँ झेल चुके हैं और इस जानकारी के आधार पर मैं कौन से छोटे-छोटे उपाय करके आगे बढ़ सकती हूँ। पहला कदम पूरा होने पर ही तो अगला कदम उठाया जा सकता है।"

-भूमिका शर्मा, राजस्थान

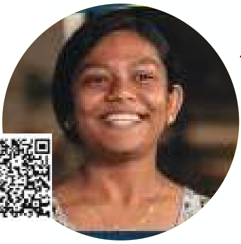

"मैंने उनसे जानना चाहा कि अपने शौक और अध्ययन के बीच संतुलन कैसे बना सकते हैं। उन्होंने समाधान सुझाया कि जब हम अपने शौक को पढ़ाई से जोड़ लेंगे तो इमें दोनों में सफलता अवश्य मिलेगी।"

-मेघा पात्रा, रायपुर, पीपीसी 2026 का छत्तीसगढ़ संस्करण

"दसवीं और बारहवीं के विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लिखने का जो कारण उन्होंने समझाया, वह एकदम ठीक लगा और उन्होंने बताया कि ये विद्यार्थी कितना दबाव झेलते हैं, उसी के बारे में उन्होंने यह पुस्तक लिखनी शुरू की थी।"

-कनिष्का एस. कोयम्बतूर, पीपीसी 2026 का तमिलनाडु संस्करण

"जब सर आए तो हमने देखा कि उन्होंने वर्लीआर्ट के काम वाली जैकेट पहन रखी थी। हमारे जनजातीय समुदाय में वर्लीआर्ट का खास महत्व है। इसलिए हमें देखकर बहुत अच्छा लगा।"

-मित शिलेशभाई चौधरी, देव मोगरा, पीपीसी 2026 का गुजरात संस्करण

उत्सव के रंग
स्वदेशी की भावना के संग

भारत के उत्सवों और पर्वों में आध्यात्मिक निष्ठा और सांस्कृतिक हर्षोल्लास का सम्मिश्रण परिलक्षित होता है।

रमज़ान के पावन महीने से रंगोत्सव होली तक हमारे सभी धार्मिक आयोजनों में 'वोकल फॉर लोकल' का मंत्र समाहित रहता है, जिससे यह सुनिश्चित हो जाता है कि हमारे पर्वों से मिलने वाली समृद्धि का लाभ हमारे स्थानीय उत्पादकों को भी मिले।

जब भी हम स्थानीय तौर पर उत्पादित कोई वस्तु चुनते हैं तो हम निश्चित रूप से किसी स्थानीय कारीगर, बुनकर या छोटे उद्यमी को उसकी जीविका अर्जित करने में मदद कर रहे होते हैं। हमारी इस खरीदारी से उसके परिवार की समृद्धि में सीधा इजाफ़ा हो रहा होता है।

स्थानीय उत्पादों में हमारी मिट्टी की कहानियाँ, तकनीकें और सांस्कृतिक महक रची-बसी होती है। स्वदेशी का चयन करके और उसे खरीदकर हम यह पक्का कर लेते हैं कि हमारी पारम्परिक कलाएँ और हमारा पुरातन ज्ञान भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित हो रहा है।

रमज़ान मुबारक

हमारे पर्व और उत्सव तो हमारी संस्कृति की धड़कन हैं; आइए हम यह सुनिश्चित करें कि ये धड़कनें देश के कलाकारों और कारीगरों में भी खुशी की तरंगें जगाएँ।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

कार्रवाई के लिए आह्वान

131वाँ संस्करण

KYC या **re-KYC** केवल अपने बैंक की शाखा या आधिकारिक **App** और **authorised medium** से ही कराएँ। **OTP**, आधार नम्बर या बैंक खाते सम्बन्धी जानकारी किसी को भी न दें।

जो पढ़ा है, उसे पूरे मन से लिखिए। और जो नहीं आया, उस एक सवाल को अपने मन पर हावी मत होने दीजिए। और एक बात, अपने माता-पिता और शिक्षकों से बात करते रहिए।

अपने **password** को समय-समय पर जरूर बदलते रहें। जैसे हर मौसम के साथ खान-पान बदल जाता है, पहनावा भी बदल जाता है, वैसे ही नियम बना लीजिए कि हर कुछ दिन में आपको अपना **password** भी बदल लेना है।

हमारे होली के त्योहारों में या अन्य कोई भी त्योहार में अनेक ऐसे साजो-सामान घुस गए हैं, जो विदेशी हैं। इन्हें त्योहारों से दूर रखिए, होली से भी दूर रखिए, स्वदेशी अपनाइए।

Shivraj Singh Chouhan @ChouhanShivraj

Show translation

आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान मैंने लाल किले से पंच प्राणों की बात कही थी। उनमें से एक है - गुलामी की मानसिकता से मुक्ति।

आज देश गुलामी के प्रतीकों को पीछे छोड़कर भारत की संस्कृति से जुड़ी चीजों को महत्व देने लगा है। इस दिशा में हमारे राष्ट्रपति भवन ने भी एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

23 फरवरी को राष्ट्रपति भवन में 'राजाजी उत्सव' मनाया जाएगा। इस अवसर पर राष्ट्रपति भवन के केन्द्रीय प्रांगण में सी. राजगोपालाचारी जी की प्रतिमा का अनावरण किया जाएगा।

सी. राजगोपालाचारी जी स्वतंत्र भारत के पहले भारतीय गवर्नर जनरल थे। वे उन लोगों में थे, जिन्होंने सत्ता को पद की तरह नहीं, सेवा की तरह देखा। सार्वजनिक जीवन में उनका आचरण, आत्मसंयम और स्वतंत्र चिंतन, आज भी हमें प्रेरित करता है।

- आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Bhupender Yadav @byadavbjp

Show translation

बैंक से KYC update या re-KYC करवाने के message आते हैं, तो मन में सवाल उठता है- मैंने तो पहले ही KYC करवा रखी है, तो ये फिर क्यों?
मेरा आपसे आग्रह है, झुंझलाइए नहीं, ये आपके पैसे की सुरक्षा के लिए ही है।

#MannKiBaat

Dharmendra Pradhan @dpradhanbjp

Show translation

ओडिशा के युवा किसान हिरोद पटेल जी की यात्रा वास्तव में प्रेरक है, जिसका उल्लेख माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने 'मन की बात' में भी किया।

पारंपरिक धान की खेती से आगे बढ़ते हुए उन्होंने अपने खेत के तालाब पर जालीदार संरचना बनाकर बेल वाली सब्जियाँ उगाईं, चारों ओर केले, अमरूद और नारियल लगाए तथा तालाब में मछली पालन शुरू किया। एक ही स्थान पर खेती, फल, सब्जी और मत्स्य पालन से भूमि का बेहतर उपयोग, जल संरक्षण और अतिरिक्त आय संभव हुई, जो ओडिशा सहित देशभर के किसानों के लिए नवाचार और आत्मनिर्भरता का सशक्त उदाहरण है।

#MannKiBaat

Amit Shah @AmitShah

Show translation

मोदी जी ने #MannKiBaat में देशवासियों को डिजिटल अरेस्ट और फाइनेंशियल फ्रॉड के खिलाफ जागरूक करते हुए उन्हें निरंतर सतर्कता बरतने और जागरूक रहने की अपील की।

Gajendra Singh Shekhawat @gssjodhpur

Show translation

आज 'मन की बात' में प्रधानमंत्री जी ने बताया कि किस प्रकार 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट' में विश्व के शीर्ष नेतृत्व ने एआई की सहायता से हमारी प्राचीन पांडुलिपियों के संग्रहण, संरक्षण और उनके प्रभाव को देखकर आश्चर्य व्यक्त किया।

भारत आज अपने समृद्ध ज्ञान-विरासत को अत्याधुनिक तकनीक के माध्यम से पुनः वैश्विक परिप्रेक्ष्य में स्थापित कर रहा है।

#MannKiBaat

Giriraj Singh @girirajsinghbjp

Show translation

आज मन की बात के 131वें एपिसोड में आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने कहा कि आज देश गुलामी के प्रतीकों को पीछे छोड़कर भारतीय संस्कृति से जुड़े प्रतीकों को सम्मान दे रहा है।

उन्होंने बताया कि कल राष्ट्रपति भवन में 'राजाजी उत्सव' का आयोजन इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

यह उत्सव भारत की सांस्कृतिक विरासत, आत्मगौरव और परंपराओं के सम्मान को और सशक्त करने का प्रतीक है।

#MannKiBaat

Piyush Goyal @PiyushGoyal

Show translation

कर्नाटक के नंजनगुड केले, मैसूर पान के पत्ते और इंडी नींबू को मालदीव भेजा गया। ये उत्पाद अपने स्वाद और गुणवत्ता के लिए जाने जाते हैं, और इन्हें GI टैग भी मिला है।

आज का किसान क्वालिटी भी चाहता है, क्वांटिटी भी बढ़ा रहा है और अपनी पहचान भी बना रहा है।

#MannKiBaat

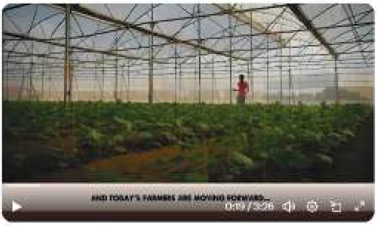

Jagat Prakash Nadda @JPNadda

Show translation

कुछ दिनों बाद होली का पर्व भी आ रहा है। आप भी अपनों के साथ हँसी - खुशी के साथ त्यौहार मनायें।

एक बात हमेशा ध्यान रखिए। होली जैसे पवित्र त्योहारों के अवसर पर हमें 'वोकल फॉर लोकल' के मंत्र को अवश्य याद रखना चाहिए।

स्वदेशी उत्पादों को अपनाकर हम सभी आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सहभागी बन सकते हैं।

- आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी।
#MannKiBaat

Kiren Rijiju @KirenRijiju

Show translation

मैं अक्सर कहता हूँ 'जो खेले-वो खिले'। खेल हमें जोड़ता भी है। आजकल आप T-20 world cup के मैच देख रहे होंगे, और मुझे पक्का विश्वास है कि मैच देखते हुए कई बार आँखें किसी खास खिलाड़ी पर टिक जाती होंगी। जर्सी किसी और देश की होती है लेकिन नाम सुनकर लगता है कि अरे, ये तो अपने देश का है। तब दिल के किसी कोने में एक हल्की सी खुशी आती है, क्योंकि वो खिलाड़ी भारतीय मूल का होता है और वो उस देश के लिये खेल रहा होता है जहां उसका परिवार बस गया है: माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Dr.L.Murugan @DrLMurugan

Show translation

நமது தேசத்தில், மக்களுக்காக சமூகப் பணியாற்றியவர்கள் சிலர் எப்போதும் நினைவில் வைக்கப்படுவார்கள். அப்படியாக, தமிழக மக்களின் மனதிலிருந்து நீங்காத இடம் பிடித்தவர் அம்மா ஜெயலலிதா அவர்கள். அவருடைய பிறந்தநாள் இம்மாதம் வரவுள்ளது.

அம்மா ஜெயலலிதா அவர்கள் மீது தமிழக மக்களுக்கு இருக்கின்ற பாசம் எந்தளவிற்கு என்றால், நான் தமிழ்நாடு செல்கின்ற போதெல்லாம், அவருடைய பெயர் உச்சரிக்கின்ற போது மக்கள் முகம் மலர்ச்சியடையும். தன்னுடைய நிர்வாகத்தில், பெண்கள்-தாய்மார்கள்-சகோதரிகளுக்காக பாராட்டுக்குரிய முயற்சிகளை மேற்கொண்டுள்ளார்.

தேசபக்தி உணர்வும், பாரத கலாச்சாரத்தின் மீதும் அதிகளவிலான மரியாதை வைத்திருந்தவர், மாநிலத்தின் சட்டம்-ஒழுங்கை சீராக பாதுகாத்தவர்.

-மாண்புமிகு பாரதப் பிரதமர் திரு. @narendramodi ஜி அவர்கள், 'மனதின் குரல்' நிகழ்ச்சியில் பேசியது.

Pralhad Joshi @JoshiPralhad

During today's #MannKiBaat, Hon'ble PM Shri @narendramodi ji highlighted how Karnataka's farmers are now reaching global markets with ease even by airways.
Bananas from Nanjangud, betel leaves from Mysuru and Indi lemons, all GI-tagged products are now being exported to Maldives, due to their unmatched taste and quality.

Today's farmers are not only increasing quantity but focusing on quality, building a strong global identity for India's agricultural excellence.

ಪ್ರಧಾನಮಂತ್ರಿ ಶ್ರೀ @narendramodi ಅವರು ಇಂದಿನ #MannKiBaat ಕಾರ್ಯಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಕರ್ನಾಟಕದ ರೈತರ ಸಾಧನೆಯನ್ನು ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಶ್ಲಾಘಿಸಿದರು.

ನಮ್ಮ ರಾಜ್ಯದ ಹೆಮ್ಮೆಯ ಜಿಐ (GI) ಮಾನ್ಯತೆ ಪಡೆದ ಉತ್ಪನ್ನಗಳಾದ ನಂಜನಗೂಡಿನ ಬಾಳೆಹಣ್ಣು, ಮೈಸೂರು ವೀಳ್ಯದೆಲೆ ಹಾಗೂ ಇಂಡಿ ನಿಂಬೆಹಣ್ಣುಗಳು ತಮ್ಮ ವಿಶಿಷ್ಟ ರುಚಿ ಮತ್ತು ಉನ್ನತ ಗುಣಮಟ್ಟದಿಂದ ಇದೀಗ ವಾಯು ಮಾರ್ಗದ ಮೂಲಕ ಮಾಲ್ಡೀವ್ಸ್ ಸೇರಿದಂತೆ ಜಾಗತಿಕ ಮಾರುಕಟ್ಟೆಗಳಿಗೆ ರಫ್ತಾಗುತ್ತಿವೆ.

ರೈತರು ಕೇವಲ ಅಧಿಕ ಇಳುವರಿಗೆ ಸೀಮಿತವಾಗದೆ, ಗುಣಮಟ್ಟದ ಕೃಷಿಗೆ ಆದ್ಯತೆ ನೀಡುವ ಮೂಲಕ ಭಾರತೀಯ ಕೃಷಿ ಕ್ಷೇತ್ರಕ್ಕೆ ಜಾಗತಿಕ ಮಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಮನ್ನಣೆ ತಂದುಕೊಡುತ್ತಿದ್ದಾರೆ.

Hardeep Singh Puri
@HardeepSPuri

Show translation

अब तक की सबसे बड़ी AI summit #IndiaAIImpactSummit2026 देशवासियों की उपलब्धियों को सामने लाने का एक मजबूत प्लेटफॉर्म बना।

आने वाले समय में AI की शक्ति का उपयोग दुनिया किस प्रकार करेगी, इस दिशा में यह summit एक turning point साबित हुई है।

Summit में दो products ने दुनिया भर के leaders को बहुत प्रभावित किया-

1- अमूल के booth पर AI जानवरों का इलाज करने में हमारी मदद कर रही है और 24x7 AI assistance की मदद से किसान अपनी डेयरी और जानवर का हिसाब रखते हैं
2- AI की मदद से हम हमारे प्राचीन ग्रंथों को, हमारे प्राचीन ज्ञान को, हमारी पांडुलिपियों को संरक्षित कर रहे हैं, आज की generation के अनुरूप ढाल रहे हैं

इस summit में दुनिया को AI के क्षेत्र में भारत की अद्भुत क्षमताएँ देखने को मिली हैं। इस दौरान भारत ने तीन Made in India AI Model भी launch किए।
#MannKiBaat

Dr. S. Jaishankar
@DrSJaishankar

Among the many inspiring examples of innovation and transformation shared by PM @narendramodi in today's #MannKiBaat, here are a few key highlights:

➡️ The recently held #IndiaAIImpactSummit2026 in New Delhi saw the participation of several world leaders, tech CEOs, innovators and start-ups.

➡️ Visitors were particularly impressed by farmers using @Amul_Coop's '24x7 AI Assistant' to monitor dairy operations and livestock, and by 'Gyan Bharatam', which is leveraging AI to preserve India's ancient scriptures, traditional knowledge and manuscripts.

➡️ The presence of Indian-origin players representing national teams of 🇨🇦 🇺🇸 🇴🇲 🇳🇿 🇦🇪 🇮🇹 and others at the Men's cricket 2026 #T20WorldCup reflects how the Indian diaspora contributes to their adopted nations while retaining a strong bond with their motherland.

➡️ India's agricultural exports are reaching new markets by air, with Nanjangud bananas from Karnataka, betel leaves from Mysuru, and Indi lemons recently shipped to the Maldives.

Do Listen: m.youtube.com/watch?v=ERW9H...

Dr. Ravi C. T 🇮🇳 ಡಾ. ರವಿ ಸಿ. ಟಿ
@CTRavi_BJP

Show translation

ಪ್ರಧಾನಿ @narendramodi ಜಿ ಅವರು ಇಂದು ತಮ್ಮ ಮನ್ ಕಿ ಬಾತ್ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮದಲ್ಲಿ, ಕರ್ನಾಟಕದ ಜಿಐ ಟ್ಯಾಗ್ ಹೊಂದಿರುವ ಬೆಳೆಗಳ ಕುರಿತು ದೇಶದ ಗಮನ ಸೆಳೆದರು. ನಂಜನಗೂಡು ರಸಬಾಳೆ, ಮೈಸೂರು ವೀಳ್ಯದೆಲೆ, ಮತ್ತು ಇಂಡಿ ನಿಂಬೆಹಣ್ಣುಗಳು ತಮ್ಮ ಗುಣಮಟ್ಟದಿಂದ ಇಂದು ವಿವಿಧ ದೇಶಗಳಿಗೆ ರಫ್ತಾಗುತ್ತಿರುವ ಕುರಿತು ಪ್ರಧಾನಿ ಸಂತಸ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದ್ದಾರೆ.

Pravati Parida
@PravatiPOdisha

Hon'ble Prime Minister Shri @narendramodi Ji lauds Odisha farmer Hirod Patel on Mann Ki Baat, highlighting his inspiring agricultural innovation.
#MannKiBaat

PMO India @PMOIndia · Feb 23
Odisha farmer Hirod Patel finds special mention in #MannKiBaat
odishatv.in/odisha/odisha-...

via NaMo App

Odisha farmer Hirod Patel finds special mention in PM Modi's 'Mann Ki Baat'
ODISHA TV

PM Modi praised Odisha's young farmer Hirod Patel during the 131st episode of Mann Ki Baat, describing his journey as inspiring and transformative. Moving beyond conventional paddy cultivation, he diversified into banana and fish farming as well. Hirod Patel has earned significant profits by cultivating paddy, bananas and fish.

Dr Dilip Jaiswal 🇮🇳
@DilipJaiswalBJP

Show translation

आज दुनिया को लगता है कि भारत वो ताकत है, जो 21वीं सदी की चुनौतियों का समाधान दे सकती है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

भारत के पास अद्भुत क्षमताएं...एआई के इस्तेमाल पर दुनिया को दिखाई दिशा : मोदी

मन की बात : समिट की सफलता पर देशवासियों को दी बधाई, बताया-प्राचीन ग्रंथों और इतिहास को किया जा रहा संरक्षित

साइबर सतर्कता जरूरी

आलिन को सराहा, लोगों से कहा-अंगदान के लिए आगे आएं

जयललिता के प्रति लोगों का लगाव बरकरार

राजाजी उत्सव गुलामी की मानसिकता से बाहर आने का प्रमाण

मन की बात के 131वें एपिसोड में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिए तीन मंत्र

टेक्नोलॉजी अपनाएं, ऑर्गन डोनेशन को बढ़ावा दें ; साइबर क्राइम से सतर्क रहें

देश में ऑर्गन डोनेशन की जरूरत

'मन की बात' में पीएम ने कई मुद्दों को सामने रखा

डिजिटल लेन-देन, बैंकिंग सेवाओं के साथ साइबर सुरक्षा के प्रति लोगों को सचेत किया

मन की बात • डिजिटल ठगी पर सतर्क रहें

केवाईसी के लिए संजीदा रहें लोग, त्योहारों में अपनाएं स्वदेशी: मोदी

भास्कर न्यूज़|नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने डिजिटल ठगी से सतर्क रहने और बैंक खाते की सुरक्षा के लिए केवाईसी अपडेट करने का आग्रह किया। साथ ही, उन्होंने त्योहारों के अवसर पर स्वदेशी उत्पादों के उपयोग और 'वोकल फॉर लोकल' अपनाने की अपील भी की, ताकि देश की आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिले।

मोदी ने रविवार को मन की बात में कहा, बैंक केवाईसी मांगें तो हल्के में न लें। उन्होंने बताया कि दिल्ली में हुई एआई समिट में भारत की ताकत दिखी। मोदी ने छात्रों के लिए कहा कि परीक्षा के समय मन में शंका आना स्वाभाविक है, लेकिन घबराने की जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा कि हर पीढ़ी ने यह अनुभव किया है और छात्र अकेले नहीं हैं।

आज राष्ट्रपति भवन में मनेगा 'राजाजी उत्सव'

प्रधानमंत्री मोदी ने बताया कि राष्ट्रपति भवन में सोमवार को 'राजाजी उत्सव' मनाया जाएगा। इसके तहत केंद्रीय प्रांगण में सी. राजगोपालाचारी की प्रतिमा का अनावरण किया जाएगा। राजगोपालाचारी स्वतंत्र भारत के पहले भारतीय गवर्नर जनरल थे।

मन की बात की 131वीं कड़ी में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ,गुलामी की मानसिकता से मुक्ति और राजाजी उत्सव

Modi honours infant organ donor in Mann Ki Baat

The Prime Minister's remarks brought national attention to a case that has resonated widely in Kerala

മൻ കി ബാത്തിൽ പരാമർശം

രാജ്യത്ത് അഭിമാനമായി പെരിങ്ങോട്ടുകര ഗ്രാമം

KAUMUDI SPECIAL

മൂന്നരയേക്കറിൽ 570 നെല്ലിനങ്ങൾ

കൃഷി ചെയ്യുന്ന അപൂർവ ഇനങ്ങൾ

এআই সামিটে গোটা বিশ্ব ভারতের ক্ষমতা দেখেছে, 'মন কি বাতে' মোদী

एआई समिट और केरल कुंभ की सराहना की

'मन की बात' कार्यक्रम में मोदी बोले - दुनिया ने भारत की अद्भुत क्षमताएं देखीं

وزیراعظم کا ماہانہ من کی بات پروگرام

ڈیجیٹل دھوکہ دہی سے خبردار رہیں

مودی کی لوگوں سے اپیل، بینک تفصیل کی حفاظت کرنے کی تلقین

ମନ କି ବାତରେ ଦେଶକୁ ମୋଦୀଙ୍କ ୩ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ମନ୍ତ୍ର

ହିରୋଦଙ୍କ କ୍ଷେତ କୃଷି ବୈଜ୍ଞାନିକଙ୍କ ପ୍ରୟୋଗଶାଳା

'ମନ୍ କି ବାତ'ରେ ସୁବକାଶଙ୍କୁ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପ୍ରଶଂସା

ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀ, କେନ୍ଦ୍ର ମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପ୍ରଶଂସା

'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' 'ਚ ਬੋਲੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਮੋਦੀ: ਏ.ਆਈ. ਦੇ ਖੇਤਰ 'ਚ ਭਾਰਤ ਨੇ ਦੁਨੀਆ ਨੂੰ ਦਿਖਾਈ ਆਪਣੀ ਤਾਕਤ

पीएम मोदी ने 'मन की बात' में लोगों को साइबर धोखाधड़ी से किया सावचेत

OTP, आधार, बैंक विवरण साझा न करें: पीएम मोदी

अंगदान करने वालों की सराहना की

मोदी ने छात्रों को दिया संदेश

राष्ट्रपति भवन में आज मनेगा राजाजी उत्सव, प्रतिमा का होगा अनावरण

من کی بات میں وزیر اعظم کا قوم سے خطاب

ڈیجیٹل فراڈ سے ہوشیار رہیں، دیسی مصنوعات استعمال کریں

Summit turning point of future global AI use: PM

Hirod featured in 'Mann Ki Baat' for pond-based farming

'एआय समिट'मध्ये भारताच्या सामर्थ्याचे दर्शन

दक्षता महत्त्वाची; 'मन की बात'मध्ये पंतप्रधानांचा संवाद

PM Modi highlights AI breakthroughs, cultural pride and compassion in latest 'Mann Ki Baat'

Spirit of patriotism was deeply entrenched within Jayalalithaa, says Prime Minister in *Mann Ki Baat*

The Hindu Bureau
NEW DELHI

Prime Minister Narendra Modi reached out to the National Democratic Alliance voter base in poll-bound Tamil Nadu on Sunday by paying tribute to the Tamil Nadu Chief Minister Jayalalithaa, praising her leadership and welfare initiatives.

He said Jayalalithaa, whose birth anniversary is on Tuesday, had a "crystal clear" thought process and had a lasting impact on the people of the State.

The BJP is in alliance with the AIADMK in the State, where the Assembly election is expected to be held in April-May.

In his *Mann Ki Baat* address, the Prime Minister said Amma Jayalalithaa had worked for the welfare of society and he still felt the deep affection the people of Tamil Nadu had for her.

"Our *Nari Shakti* connection with her has been even more special. This is also because while in government, she made many commendable efforts for the welfare of mothers, sisters, and daughters," he said.

Paying tribute to Jayalalithaa, Prime Minister Narendra Modi recounted how the late leader had attended his swearing-in ceremonies as Gujarat Chief Minister in 2002 and 2012. FILE PHOTO

> Many years ago, she invited me to Chennai over lunch on the auspicious occasion of Pongal. That affectionate gesture will remain unforgettable for me
>
> NARENDRA MODI
> Prime Minister of India

The Tamil Nadu unit of the BJP on Sunday attacked the ruling DMK and said the law-and-order situation in the State was "in shambles".

Concrete steps

Recalling Jayalalithaa's tenure, Mr. Modi said the late leader "took concrete steps to maintain law and order in the State". "The spirit of patriotism was deeply embedded within her. She was also deeply proud of India's cultural heritage," Mr. Modi said. He recounted how Jayalalithaa attended his swearing-in ceremonies as Chief Minister of Gujarat in 2002 and 2012.

"Her thinking was crystal clear and her thoughts undiluted. This was a significant characteristic of hers. Many years ago, she invited me to Chennai over lunch on the auspicious occasion of Pongal. That affectionate gesture will remain unforgettable for me," he said.

On multiple occasions in the past, the Prime Minister has spoken about his personal rapport with Jayalalithaa.

मार्कशीट ही आपकी योग्यता का पैमाना नहीं

ಮನ್ ಕೀ ಬಾತ್‌ನಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನಿ ಮೋದಿ ವಿಶ್ಲೇಷಣೆ | ಪ್ರಾಚೀನ ಜ್ಞಾನ, ಪರಂಪರೆ, ಧರ್ಮಗ್ರಂಥಗಳ ರಕ್ಷಣೆಯಲ್ಲೂ ಎಐ ಪಾತ್ರ

ಎಐ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಭಾರತದ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ತೆರೆದಿಟ್ಟ ಶೃಂಗಸಭೆ

ಡಿಜಿಟಲ್ ವಂಚನೆಗೆ ಬಲಿಯಾಗದಿರಿ

ರೈತರ ಯಶೋಗಾಥೆಗಳು

ಸ್ವದೇಶಿ ಉತ್ಪನ್ನಗಳ ಬಳಕೆ

प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात में कहा | विचार | जो खेलता है, वही खिलता है

भारतीय मूल के कई खिलाड़ी अपने देश का गौरव बढ़ा रहे

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 22 फरवरी।

आज तक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की डिजिटल फ्रॉड पर चेतावनी, OTP और आधार साझा न करने की अपील

भारत EXPRESS
सत्य • साहस • समर्पण

मन की बात में पीएम मोदी ने 'राजाजी उत्सव' का किया ऐलान, स्वदेशी अपनाने की अपील

ETV بھارت

آپ کی قیمت کا تعین آپ کی مارک شیٹ سے نہیں ہوتا، پی ایم مودی نے من کی بات میں طلباء کی حوصلہ افزائی کی

Hindustan Times

PM Modi hails AI Summit, warns against digital fraud in Mann Ki Baat

The Indian EXPRESS

'Your worth isn't defined by marks,': PM Modi cheers exam warriors at Mann Ki Baat

millenniumpost

'Don't share OTP, Aadhaar, bank details': PM on fighting digital fraud

THE FEDERAL

PM Modi stresses 'Vocal for Local', digital safety, and cultural pride in Mann Ki Baat

THE HINDU

Maan ki Baat: PM Modi urges citizens to 'be alert against digital arrest scams'

THE NEW INDIAN EXPRESS

World leaders impressed with India's achievements in AI, says PM Modi

ThePrint

PM Modi talks about importance of organ donation, commends all undertaking such noble deeds

The Statesman

This is the speciality of Bhartiyata: PM applauds Indian-origin players in foreign teams during T20 WC

THE TIMES OF INDIA

Beware of digital fraud, do KYC via official channels: PM in 'Mann Ki Baat'

ZEE BUSINESS

PM's 'Mann Ki Baat': AI, culture, sports, youth spirit take centre stage

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव हमारे लिए महत्त्वपूर्ण हैं! हमें इस ईमेल एड्रेस पर लिखें : mkb-mib@gov.in

इस समिट में दुनिया को AI के क्षेत्र में भारत की अद्भुत क्षमताएँ देखने को मिली हैं। इस दौरान भारत ने तीन मेड इन इंडिया AI मॉडल भी लॉन्च किए। यह अपने आप में अब तक की सबसे बड़ी AI समिट रही है। इस समिट को लेकर युवाओं का जोश और उत्साह देखते ही बन रहा था। मैं सभी देशवासियों को इस समिट की सफलता की बधाई देता हूँ।

– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

के. सं. ब्यू./ हिन्दी/ मार्च 2026

केंद्रीय संचार ब्यूरो
द्वारा मुद्रित

मै. जेके ऑफसेट ग्राफिक्स, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित